क्षत्रपति महाराज शिवाजी ।

छत्रपति महाराज

शिवाजी का जीवनचरित.

सम्वर्द्धित और संशोधित.

दच्छिण जीत लियो दल के बल, पच्छिम जीत के चामर राख्यो।
रूप गुमान गख्यो गुजरात को, सूरत को रस चूसि के चाख्यो॥
पञ्जन पेलि मलेच्छ मले, बच्यो भूषन सोई जो दीन ह्वै भाख्यो।
सौरङ्ग है शिवराज बली, जिन नौरङ्ग में रङ्ग एक न राख्यो॥

श्री कार्त्तिकप्रसाद लिखित

और

बाबू नन्दलाल वर्म्मा प्रकाशित।

काशी।

लहरी प्रेस, महल्ला लाहौरी टोला में मुद्रित।

दूसरी बार १०००]   सं.१९५८।   [मूल्य ।, आ.
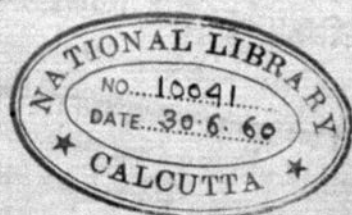
पहिली आवृत्ति की—

भूमिका।

जिस देश में वा जिस समाज में जो चिरस्मरणीय कीर्तिवान् लोग उत्पन्न होते हैं वेही उसदेश वा समाज के रत्न या गौरव माने जाते हैं और उन्ही से उस समाज की शोभा होती है। क्या शिवाजी ऐसे वीर हमलोगो के गौरव नहीं हैं? अवश्य हैं। इस समय भी उस वीर पुरुष के इतिहास को पढ़ने से उस अतीतकाल की घटनायें चित्रसी नेत्रों के आगे झलक जाती हैं। उस समय हृदय में आनन्द और उत्साह उमग आता है, शरीर पुलकित और रोमाञ्चित हो जाता है! ऐसे शिवाजी के जीवनचरित पढ़ने की इच्छा किसे न होगी? अवश्य सबको होगी। बस इसी आशों से आश्वासित हो आज इस क्षुद्र पुस्तक को आप लोगों को भेंट करता हूं और साथही यह प्रार्थना है कि सिवाय शिवाजी के गुण कीर्तन के इसमे दूसरा ऐसा कोई भी गुण नहीं है कि जिससे आप रीझें।

जो हो सद्‌गुणविभूषित सज्जनों से निवेदन है कि इसके मूल उद्देश पर ध्यान दे मेरी भूल चूक को चमा करें। कृतज्ञतापूर्वक मैं स्वीकार करता हूं कि इस पुस्तक के लिखने में मैंने नीचे लिखी पुस्तकों से सहायता ली है—

C. Marshman' History of India, श्रीयुत बाबू रजनीकान्त गुप्त की "वीरमहिमा" श्रीयुत बाबू रमेशचन्द्रदत्त का भारतवर्षीय इतिहास और भारतेन्दु बाबू हरिश्चिन्द्र लिखित "महाराष्ट्र देश का इतिहास" तथा भूषण कवि का शिवराजभूषण॥

दूसरी आवृत्ति को

भूमिका।

आज बड़े उत्साह का दिन है कि गुणग्राहक हिन्दी रसिकों के सम्मुख महाराज छत्रपति शिवाजी के जीवनचरित्र की दूसरी आवृत्ति लेके उपस्थित होता हूं। जिस समय प्रथम मेरी इच्छा इन वीर महात्मा की जीवनचरित लिखने की हुई थी तो उस समय ऐसा अनुमान हुआ था कि न तो यह कोई उपन्यास है न इसमें किसी तिलिस्म का तिलस्मात है और न ऐयारों की ऐयारी है, न किसी की यौवनवती सुकुमारी की प्रेम कहानी है फिर भला सूरवीर पर किसका जी जमेगा और कौन इस जीवनी को घर के पैसे खर्च कर पढ़ेगा; परन्तु मेरा वह भ्रम मात्र था अभी भी चिरवीरप्रसविनी भारतवसुंधरा में अपने देश के गौरव और रत्न स्वरूप वीरकुलभूषण शिवाजी ऐसे वीर की वीर कहानी पढ़ने सुनने वाले सज्जन लोग बहुत हैं। यह उन्हीं के अनुराग का उदाहरण है कि आज वीर शिवाजी के जीवन के चरित की दूसरी

आवृत्ति का सुअवसर मिला। इस उत्साह से उत्साहित हो प्रथम वार से अवकी अनेक बातें बढ़ा दी हैं और साथही प्रतिज्ञा करते हैं कि यदि पूर्व्ववत् अवकी भी प्रिय पाठकों ने मेरा उत्साह बढ़ाया और मैं जीता रहा तो तीसरी आवृत्ति में इस पुस्तक का आकार द्विगुणित करने की इच्छा है। क्योंकि शिवाजी ने जितने युद्ध किये हैं और जितने किले और गढ़ तथा गढ़ीयां अपने अधिकार में कर ली थीं उनका यदि सविस्तर हाल लिखा और वर्णन किया जाय तो अवश्य इससे तिगुनी चौगुनी बड़ी पुस्तक बन जाय, परन्तु आज इस इच्छा को भविष्य के गोद में छोड़ केवल उन अधिकृत किलों के स्थान और नाम मात्र लिखे देते हैं जिन्हें पढ़के स्वयम् पाठक पुस्तक के आकार और शिवाजी की बीरता का हवाल समझ लेवेंगे॥

शिवाजी कैसे निधड़क बीर थे उसका द्योतक यह पत्रही है जो शिवाजी ने औरङ्गजेब को जजिया बन्द करने को लिखा था यह पत्र मुझे मेरे परम मित्र बाबू जगन्नाथदास बी० ए० उपनाम कवि रत्नाकर द्वारा प्राप्त हुआ था और इसका हिन्दी अनुवाद भी उन्हीं ने छपा कर लिख दिया था॥

दिल्ली के शाही दर्बार में उक्त बाबू साहब के पूर्व्व पुरुषगण परम प्रतिष्ठा सम्पन्न थे। जब शाहआलम के बेटे जहांदारशाह दिल्ली से बनारस आये तो उन्हीं के साथ इनके प्रपितामह तुलारामजी यहां आये और शाहजादों के सन्निकट शिवाले घाट पर ठहरे जहां अबलों रहते हैं। इन्हीं के पुस्तकालय से यह पत्र भी मिला। इस पत्र को शिवाजी ने जिज़िया नामक कर (टेक्स) के उठा देने के हेतु औरङ्गजेब को लिखा था। इस पत्र के पढ़ने से शिवाजी की निर्भयता, दृढ़ता, नीतिपरायणता, प्रजावत्सलता आदि अनेक गुणों का परिचय मिलता है इसीलिये यह पत्र उनके जीवनचरित के साथ प्रकाश किया गया॥

अबकी इस पुस्तक का जितना भाग बढ़ाया है वह श्रीयुत बाबू सत्याचरण शास्त्रीजी के लिखित शिवाजी का जीवनचरित से अनुवाद करके लिखा है॥

मैं हृदय से भारतजीवन पत्र के स्वामी श्रीयुत बाबू रामकृष्ण वर्म्मा को धन्यवाद देता हूं और उनका उपकार मानता हूं कि उन्हों ने मुझ पर कृपा कर अपना अमूल्य समय नष्ट कर इसका प्रूफ देख दिया॥

कार्तिकप्रसाद।

शिवाजी के अधिकार में नीचे लिखे किले तथा स्थान थे :—

सितारा देश में—

सितारा, वैराटगढ़, वर्द्धनगढ़, परलीया सज्जनगढ़, पाण्डवगढ़, महिमानगढ़, कमलगढ़, वन्दनगढ़, ताथवड़ा, चन्दनगढ़, मान्दगिरी।

कराड़ प्रदेश—

वसन्तगढ़, मचिन्द्रगढ़, भूषणगढ़, कसवा कराड़।

सहाद्रि मावल प्रदेश—

रोहिड़ा, सिंहगढ़, नारायणगढ़, कुवारी, केलना, पुरंदर दौलत मंगल, मोरगिरी, लोहगढ़, रुद्रमाल, राजगढ़, तुंग, तिकोना, राजमाची, तोरणा, दातेगढ़, विसापुर, वांसोटा, शिवनेरी।

पानहला प्रदेश—

पन्याल, खेलना, विशालगढ़, पावनगढ़, राङ्गना, गजेन्द्रगढ़, भूधरगढ़, पारगढ़, मदनगढ़, भवगढ़, भूपालगढ़, गगनगढ़, वावड़ा, कोकन, वंधारी।

जल दुर्ग प्रदेश—

मालवन सिन्धुदुर्ग, विजयदुर्ग, जयदुर्ग, रत्नागिरी, सुवर्णदुर्ग, खांनदेरी, उन्देरी, राजकोट, पद्मनवेल,

रेवदंडा, रायगढ़ पाली, कलानिधिगढ़, पारगाव, सुरंगगढ़, मानगढ़, महीपतगढ़, मच्छिमल्लनगढ़, सुमारगढ़, रसालगढ़, करनाल, भोरोप वल्लालगढ़, सारंगगढ़, मानिकगढ़, सिन्दगढ़, मच्छनगढ़ बाल-गढ़, मच्छिमल्लगढ़ लिंगाना, प्राचीतगढ़, समानगढ़, काङ्केरी प्रतापगढ़, तलागढ़, घोषालगढ़, विजाड़ी, भैरवगढ़, प्रबलगढ़, पवचितगढ़, कुम्भगढ़, सागरगढ़, मनोहरगढ़, सुभानगढ़, मित्रगढ़, प्रह्लादगढ़, मच्छनगढ़, सहनगढ़, शिखेरागढ़, वीरगढ़, महीधरगढ़, रणगढ़, सेठगा गढ़, मकरन्दगढ़, माहुली, भास्करगढ़, कर्णथी।

थाना प्रदेश—

कल्याण भिवड़ी, वाई, कराड़, सुपे, खटाव, बारा-मती, चाकन, शिरवल, मिरज, तासगांव, करवीर।

बागलान प्रदेश—

सालेरी, नहारा, हरसल, मुलेरी, कनेरा, पसाढ़, पश्चिमल्लगढ़, घोड़ीप।

नासिक त्र्यम्बक प्रदेश—

त्रिम्बक, वाहुला, मनोहरगढ़, बखलागढ़, पाव-खस, कूगगढ़, करोला, राजपेहर, रामसेन, मांचना गढ़, हर्षन, अचलागढ़, चांदगढ़, सबलगढ़, पावटा,

कानकाई, नड़गड़ा, मबरखान, जीवधन, बब्बर, वरीन्द्र-गढ़, मारकण्डेय गढ़, पटावढ़, टनकाई, सिंहगढ़, कोण्ड।

बिदनूर प्रदेश—

कोट फोण्ड, कोट कापुर, कोट बकार, कोट ब्रह्मनाल, कोट काडबल, कोट पाकोले, कोट काठर, कोट कालवर्गे, कोट भिवेश्वर, कोट मङ्गरूल, कोट कड़नाल, कोट कृष्णागिरी।

जगदेव गढ़ और कर्नाटकादि प्रदेश—.

गदेवगढ़, सुदर्शनगढ़, रमनगढ़, नन्दीगढ़, प्रबल-गढ़, वैष्णिरवगढ़, महाराजगढ़, सिंहगढ़, जवादिगढ़, मारतण्डगढ़, मंगलगढ़, गगनगढ़, कृष्णागिरी, मल्लि-कार्जुनगढ़, कस्तूरीगढ़, दीर्घपलिगढ़, रामगढ़,।

श्रीरङ्ग पट्टन प्रदेश—

कोठेधर्मपुरी, हरिहरगढ़, कोट मरुड़, प्रमोद-गढ़, मनोहरगढ़, भवानीदुर्ग, कोट चमरापुर, कोट कुम्हूर, कोट तलेबिरो, सुन्दरगढ़, कोट तलगोण्ड, कोट पठेनूर, कोट चिंचाडुरे; कोट हुटानेठी, कोट बलनूर, कालपगढ़, मल्लिनदीमढ़, कोट चालूर, कोट श्यामल, कोट चिराड़े, कोट चंदमाल।

मिलोर प्रदेश—

कोट धारवाट, कोट लक्ष्मूर, कोट पालनापट्टन, कोट चिमल, कोट भिवाडो, पालेकोट, कोट भिकोपदुर्ग, केशवगढ़, चक्रोवराकोट, कोट वृन्दावन, चेतपाल्ली, कोलवालगढ़, रसालगढ़, कमठगढ़, यशवन्तगढ़, मुखागढ़, गजेन्द्रनगढ़, मडविडगढ़, मच्छिमखनगढ़, प्राणगढ़, सजरागढ़, सामारगढ़, दुर्भेगढ़, गोजरागढ़, चतुरगढ़।

वनगढ़ प्रदेश—

वनगढ़, गजनगढ़, सिमदुर्ग, नलदुर्ग, सिरागढ़, श्रीमल्लदुर्ग, श्रीगदनगढ़, नरगुन्द महन्तगढ़, श्रीपतगढ़, बहादुरचिन्ता, वाजूटगढ़, गन्धर्वगढ़, टांकेगढ़, सूपेगढ़, पराक्रमगढ़, कनकाद्रिगढ़, प्रज्ञगढ़, चित्तदुर्ग, मदनगढ़, छडपतरगढ़, काञ्चनगढ़, पवनागिरीगढ़, मन्दनगढ़।

कोलथार बालापूर प्रदेश—

कोलथार, प्रज्ञगढ़, वडनगढ़, भास्करगढ़, महिपाल-गढ़, मृगमदगढ़ चन्देनिराईगढ़, बुधलाकोट, मानिक-गढ़, नन्दीगढ़, गणेशगढ़, धवलगढ़, हातमंगलगढ़, मच्छकप्रकाशगढ़, भीमगढ़, प्रेईवारगढ़, मेदगिरीवेम गढ़, श्रीवर्धनगढ़, विदनूर, मलकोप्पार कोट, कोट ठाकुर गढ़, सरसगढ़, मश्हारगढ़, भूमक्कनगढ़, विरूट कोट।

अन्दी प्रदेश—

राजगढ़, वैनगढ़, कृष्णागिरी, महीमण्डनगढ़, पारवलूगढ़, बालाकोट। (ग्रन्थकर्ता।)

राजा शिवा का प्रार्थनापत्र जो कि उन्होंने जज़ियाबन्द करने के विषय में स्वर्गवासी (पादशाह आलमगीर) की सेवा में भेजा था :—

जगदीश्वर की कृपा और महीश्वर की दया का जो कि भानु, तथा शीतभानु के समान प्रकाशमान हैं धन्यवाद देकर शाहंशाह की सेवा में निवेदन करता है। यद्यपि यह शुभचिन्तक अपने भाग्यबल के कारण महानुभाव से विलग हो गया है तथापि सेवकी और मानरक्षन के विधान में सर्वदा और सर्वत्र यथार्थ रीति पर और जैसा चाहिये तत्पर रहता है। इस हितेच्छुक की शुभ सेवाएं और उत्तमोत्तम परिश्रम हिन्दुस्तान, ईरान, तूरान, बल्ख, बदख्शांन तथा चीन और माचीन देशों के पादशाहों अमीरों, सर्दारों, रायों और राजों पर वरन सप्तद्वीप के निवासियों तथा जल और थल के यात्रियों पर प्रकाशित और विदित है। कदाचित् (श्रीमान् के) चरितान्वक अंतःकरण पर भी प्रतिबिम्बित हुए होंगे। अतएव

अपनी पूर्व सेवाओं और श्रीमान के अनुग्रहों पर दृष्टि करके, शुभचिन्तकता और राजभक्ति की रीति पर, कुछ बातें जो कि सर्वसाधारण तथा जन-विशेष के हित से सम्बन्ध रखती हैं निवेदन करता है कि जब इस शुभचिन्तक पर चढ़ाइयों की भीड़ के सम्बन्ध में बहुत द्रव्य नष्ट हुआ और राज्यकोष धनरहित हो गया तो यह स्थिर किया गया कि हिन्दू जाति से जिज़िये मध्ये द्रव्य उपार्जित करके राज्यकाज का प्रबन्ध किया जाय। महानुभाव! देश विजय विधान की नींव डालनेवाले और आकाश पर देहरी रखने वाले जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह ने बावन वर्ष पर्यन्त राज्यशासन का न्याव चुकाया। भिन्न २ समाजों ईसवी, मूसवी, दाऊदी, मुहम्मदी, फलकिया, अलकिया, नसीरिया, दहरिया, ब्राह्मण और सेवड़ा के धर्म और व्यवहार के सम्बन्ध में सबसे मेल रखने वाले सुन्दर बर्ताव का व्रत धारण करके जगत गुरु की उपाधि से परिचित विज्ञात और विख्यात हुए। इसी श्रेष्ठ देवता के सौभाग्य और इसी महान महत्व के प्रभाव के कारण जिधर दृष्टि करते थे जय और प्रताप अगवानी करते थे। और परलोक वासी

श्रीमान नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर बादशाह बाईस वर्ष पर्यन्त प्रताप के सिंहासन पर विराजमान रह कर मन को प्राणप्रिया और हाथ को अभीष्ट प्राप्ति में रखते थे और श्रीमान महोदय सुरपुर में डेवढ़ी रखनेवाले मुहम्मद शाहजहां बदशाह ने ३२ वर्ष तक शुभ मुकुट की कल्याणमयी छाया संसार निवासियों के सीस पर डाली और अपने मंगलमय समय में सुयश उपार्जन किया। इन महान बादशाहों के तेज, प्रताप और धाक का अनुमान इसी से करना चाहिये कि पादशाह आलमगीर ग़ाज़ी उनके स्थापित किये हुए बर्ताव और नियमों के पालन और संरक्षण में असमर्थ हैं। वे लोग भी जिज़िया लेने की सामर्थ्य रखते थे परन्तु महान परमात्मा की करुणा का परिचय सब धर्मों और व्यवहारों में समझ कर धार्मिक मात्सर्य की धूरि की शुद्ध अंत:करण के आस-पास आने का मन नहीं देते थे। ईश्वर की सृष्टि के लोग उनके राज्य शासन के समय में निर्भीत और संरक्षित रह कर निश्चिन्तता और सम्पन्नता पूर्वक अपने अपने कार्यों के साधन और व्यवसाय में प्रवृत्त रहते थे। महानुभाव के समय से बहुधागत अधिकार

से निकल गए हैं, और शेष भी थोड़ही निकल जायँगी, क्योंकि देश के नष्ट और भ्रष्ट करने में चारों ओर से रंचक भी त्रुटि नहीं होती। प्रजा पिसी जाती है और प्रत्येक प्रदेशों की आय खिसो जाती है, सौ हजार के स्थान पर दस है। जब दुर्दशा और दरिद्र ने पादशाही सम्पति सदन में स्थान पा लिया तो इतरजनों की क्या दशा हो। इस समय के बड़े बड़े अमीरों की अवस्था सङ्कीर्ण हो रही है। सेना हाहा कार में प्रवृत्त है और व्यापारी पुकार में, मुसल्मान रोते हैं और हिन्दू जलते, बहुधा मनुष्य अशन और बसन नहीं पाते हैं और बड़े २ श्रेष्ठ फकीर हाथों से मुंह लाल करके जन साधारण और विशेष को दिखाते हैं, पादशाही शील इन बातों को कैसे सहन कर सकता है। संसार के (इतिहास) के पत्र पर अङ्कित होता है कि हिन्दुस्तान का पादशाह भिक्षुकों, वैरागियों, संन्यासियों और निस्सहायों के खप्पर पर बलात् हस्ताक्षेप कर जिज़िया लेता है और धनहीनों के खीसे पर पुरुषार्थ जताता है, और तैमूर के कुल के नाम और कान्ति को डुबोता है। महानुभाव! यदि मूल ईश्वर वाक्य पर निश्चय करें तो भुवनेश्वर

का शब्द घटित है न मुसल्मानेश्वर का। वास्तव में इसलाम और अनिसलाम दोनों सामने सामने के बिन्दु हैं और आदि चित्रकार के बनाए हुए ढांचे हैं। यदि मसजिद है तो उसमें भी उसी की उत्कण्ठा में लोग बांग देते हैं और यदि देवालय है तो उसमें भी उसी की अभिलाषा में दुन्दुभी बजाते हैं। किसी के धर्म और व्यवहार पर विद्वेष करना माननीय कुरआन से विमुख होना है और आदिचित्र पर रेखा खींचना। श्रेष्ठ न्यायालय की व्यवस्थानुसार तो हिन्दुस्तान का जिज़िया अनुचित है पर हां धींगाधींगी के अनुसार उचित हो सकता है। पहिले ऐसाही था, ध्यान दें, और किसी के पन्थ में विघ्न न डालें। श्रीमान के समय में नगर उजाड़ हो रहे हैं वनों को कौन पूछे पहिले महाराना और राजों से जो कि हिन्दुओं के सर्दार हैं जिज़िया लें, और फिर इस शुभचिन्तक से। चीटियों और मक्खियों को दुःख देना पुरुषत्व और पुरुषार्थ नहीं कहलाता। अचैतन्यता तथा लोलुपता का मान प्रकाशमान और दीप्तिमान रहे॥

درعالم عدالت العالیه جزیه هند ناسزا است اما بشرط حکومت
درست تواند بود پیشتر چنین بود غور فرماشوند و در راه کسے
خلل نینداز ند در عصر حضرت شهرها بتاراج میروند صحرا که
پرسد اول جزیه از مهارانا و راجها بگیرند که سرکرده هنود اند
و من بعد از خیرخواه موران و مگسان را آزار دادن مردی
و مردانگی نیست آفتاب بهوشی و بوالهوسی ساطع و لامع باد۔

طرف قصورے نمی شود رعایا پامال و محاصل ہر محال در پئے زوال
بجائے صد ہزار ہزار و بجائے ہزار ده دار د و ہر گاه فلاکت و
افلاس بدولت خانہ بادشاہی جا کرده باشد بمردم دیگر چہ رسد
احوال امرائے معالی الوقت تنگ است سپاه در شورش و
سوداگران بنالش مسلمین گریان و ہنود بریان واکثر مردم بپارچہ
ونان محتاج اند و امراے عظیم المرتبت از پنجہ رخسار شنیع نمودہ
بخاص و عام میرسند فتوت سلطانی چگونہ اقتضا کند و بر صفحہ
روزگار ثبت نشود کہ بادشاه ہندوستان بر کچکول گدایان و بیراگیان
و سنیاسیان و درماندگان دست دراز کرده جزیہ می گیرد
و بر کیسہ گدا جوانمردی می کند و نام و ناموس تیموریہ را برباد میدہد
حضرت سلامت اگر بر اصل کلام ربانی اعتبار نمایند رب العالمین
واقع است نہ رب المسلمین ہمانا کفر و اسلام ہر دو نقطہ مقابل اند
وطرح انگریزی نقشبندی حقیقی است اگر مسجد است بیادش بانگ
میزنند و اگر کنشت است بشوق او جرس می نوازند و تعصب بر
دین و آئین کسے نمودن از قرآن مجید منحرف گردیدن است و بر نقش
ازل خط کشیدن ؎

زشت و زیبا ہر چہ بینی دست در د و بر و منہ   عیب صنعت ہر کہ گوید عیب آن صنعت گر است

از عیسوی و موسوی و داودی و محمدی صلی الله علیه و آله وسلم و فلکیه
و ملکیه و نصریه و دهریه و برهمن و سیوره طریقه انیقه صلح کل اختیار
کرده بخطاب جگت گروی مالوف و معروف و مشهور گردیدند بمیامن
این دولت علیا و تاثیر چنین عظمت و الا بهر جانب که نگاه میکردند فتح
و اقبال استقبال می نمود حضرت جنت مکانی نورالدین محمد جهانگیر بادشاه
مدت بست و دو سال بر تخت اقبال تکیه زده دل با یار جانی و دست در کامرانی
داشتند حضرت فردوس آستانی صاحب قرانی ثانی شهاب الدین محمد شاه
جهان بادشاه تا سی و دو سال سایه فیض مایه تاج مبارک بر تارک جهانیان
انداخته و نیک نامی حاصل روزگار فرخنده آثار نمودند اندازه شان
و شوکت و صلابت این بادشاه عظیم الشان ازین قیاس باید کرد که
بادشاه عالمگیر غازی در پرورش و پاسداری دستور آنها متعذر
است آنها نیز بر وجه جزیه قادر بودند اما آثار رحمت ایزد متعال
شامل حال جمیع مذاهب و مشارب دانسته غبار تعصّب را گرد خاطر
مبارک راه نمی دادند و خلق الله دران عهد در امن و امان بوده
فارغ البال و آسوده حال در کسب کار و پیشه خود ها اشتغال داشتند
و در دور حضرت اکثر قلعها از دست تصرف بدر رفته و ما بقی عنقریب
خواهد رفت زیرا که در خراب کردن و ویران نمودن ملک از چهار

عرضداشت راجه شیوا که درباب موقوفی جزیه بحضور حضرت خلد مکان انار الله برهانه معروض داشته

شکر عنایت الهی و توجهات شاهنشاهی که اظهر من والقمر است بجا آورده بعرض
حضرت شاهنشاهی می رساند اگرچه خیرخواه بحسب طالع خود از حضور والا
بکنار آمده اما در لوازم خدمت گزاری و پاسداری همه وقت و همه جا
چنانچه باید و شاید حاضر است و حسن خدمات و نیکو تردداتِ این خیرخواه
بر سلاطین و امرا و خوانین و رایان و راجه‌های ممالک هندوستان
و ولایت ایران و توران و بلخ و بدخشان و چین و ماچین بلکه ساکنان هفت
کشور و مسافران بحر و بر ظاهر و باهر است شاید بخاطر دریا مقاطر هم پرتو
افگن شده باشد لهذا نظر بتقدیم خدمات خود و توجهات در ما سخنهای
چند از راه خیراندیشی و دولت خواهی که متضمن خیریت خاص و عام ست
معروض میدارد که چون بتقریب مهم خیرخواه زری بباد رفته و خزانه تهی
گشته بنابران مقرر فرمودند که از فرقه هنود مبلغی بصیغه جزیه تحصیل نموده
سامان سلطنت را سرانجام دهند حضرت سلامت بانی مبانی کشور
ستانی عرش آشیانی جلال الدین محمد اکبر بادشاه مدت پنجاه و دو سال
باستقلال تمام داد فرمانروائی داده بادین و آئین گروه‌های مختلف

छत्रपति महाराज शिवाजी

-:का:-

जीवनचरित ।

मङ्गलाचरण ।

जयतिं जयति जय आदि-
शक्ति जय कालिकपर्दनि ।
जय मधुकैटभछलनि
देवि जय महिषविमर्दिनि ॥
जय चमुण्ड जय चण्डमुण्ड
भण्डासुरखण्डिनि ।
जय सुरक्त जय [illegible]
विड्डालविहण्डिनि ॥
जय जय निशुम्भ शुम्भद्दलनि
भनि भूषन जय जय जननि ।
सरजा समर्थ शिवराजं कँह
देहि विजय जय जय जननि ॥

प्रथम अध्याय ।

(महाराष्ट्र देश और शिवाजी की वंशावलि)

भारत के दक्षिण पश्चिम दिशा में एक छोटा सा पहाड़ी देश है। उत्तर की ओर यह सतपुरा पहाड़ से घिरा है, पश्चिम दिशा में अति गम्भीर तरङ्गों से तरङ्गित अपार अनन्त नीलवर्ण समुद्र निज अमर-वनी मूर्त्ति से इसे घेरे है। पूरब की ओर वरदा नदी बह रही है, और दक्षिण ओर गोवा नगर एवं पहाड़ी बीहड़ धरती है। इसी प्रदेश का नाम महाराष्ट्र देश है इसका परिमाण फल १०२००० वर्ग मील है। यह देश उत्तर-दक्षिण की ओर दुरारोह पर्वत गहन वनों से ढका पड़ा है कि जिसकी मनमोहनी छटा देखे ही बन आती है॥

शिवाजी के आदिपुरुष शिवराम नाम के एक परम पराक्रमी [illegible] ने चित्तौरगढ़ में जन्म लिया था। उनके तीन पुत्र थे, जिनमें से दो तो मुसल्मानों से लड़ [illegible] सिधारे। सब में छोटा भीमसिंह था। इसी तरह [illegible] निकल भौंसले दुर्ग में जा निकले जिसी से [illegible] [illegible] की उपाधि हुई। उनके पुत्र विजय-

भानु बड़े प्रसिद्ध योद्धा हुए। उनके पुत्र देवकर्ण। इनके समय में मुसल्मानों की लगातार कई बेर चढ़ाई चित्तोरगढ़ पर हुई जिससे हिन्दुओं का बल दब गया। देवकर्ण अपने दल बल को साथ ले देवगिरी (वर्त्तमान दौलताबाद) के पास वेरूलगांव में जा बसे। उनके पुत्र जयकर्ण हुए, उनके पुत्र महाकर्ण, ये बड़े ही वीरपुरुष थे। युद्धक्षेत्र में इन्हें वीरगति प्राप्त हुई। इनके पिता राजा शिव, इन्होंने भीमा नदी में न जाने क्यों अपने प्राण त्यागे। इनके पुत्र बाबाजी और प्रभाजी, ये सन् १५३१ ई० में (१४५३ शक) जन्मे थे। इनकी थोड़ी सी जिमीदारी मात्र थी। उनके मालोजी और विठोजी दो पुत्र हुए। बड़े सन् १५५० (१४७२ शक) में जन्मे। ये दोनों भाई सम्पूर्ण शास्त्र अर्थ में निपुण थे और दोनों भाइयों में बड़ा प्रेम था। अपनी अवस्था की उन्नति की लालसा से लूकजीजादव (जो कि निजामशाही दर्बार के एक प्रधान अफसर और बारह हजार सवारों के मनसबदार थे) के पास किसी नौकरी की आशा से गये। थोड़े ही समय में मालोजी अपनी बुद्धिमानी से लूकजी के कृपापात्र हो गये। मालोजी बहुत ही मोटे थे [illegible] लूकजी के

अंगरेज कर्मचारी हुए और विठोजी सवारी में नौकर हुये। उसी स्थान में शाहशरीफ नामक एक फकीर की दुवा से मालोजी के दो लड़के हुए। फकीर के नाम पर मालोजी ने बड़े लड़के का नाम शाहजी और छोटे का नाम शरीफजी रक्खा॥

लूखजी जादव ने, मालोजी के छोटे पुत्र को अपने अधिक कामों पर रख लिया। वह बड़े बुद्धिमान थे तथा उनमें और भी उनमें अनेक गुण थे। सन् १५९९ ई० में होली वाले दिन मालोजी अपने पांच वर्ष के पुत्र शाहजी को लेके लूखजी के यहां गये। शाहजी बड़े रूपवान थे। लूखजी की लड़की जिसकी उमर उस समय तीन चार वर्ष की थी, वह और शाहजी आपस में होली खेलने लगी उनकी यह बालक्रीड़ा से प्रसन्न हो अपनी कन्या जीजीबाई से बोले—छोरी तू इन से ब्याह करेगी? यह सुन सभा में बैठे हुए सब लोग बोलउठे-जोड़ी तो बड़ी सुन्दर है। यह सुन मालोजी मौका पा उठ के बोले आप लोग सुन रखिये आज से जादवराव मेरे समधी हुये। पर जादवराव ने उलट के इसका कुछ जवाब न दिया। दूसरे दिन जादवराव ने मालोजी को खाने का न्योता भेजा।

इसके उत्तर में मालोजी ने कहला भेजा "जो वह मेरे लड़के के साथ अपनी लड़की का व्याह करें तो मैं भोजन का न्योता मानूं नहीं तो नहीं। आदमी ने जाके वैसेही कह दिया। इस पर जादवराव ने भी कहा और उनकी स्त्री भी जिसे अपने धन का बड़ा अभिमान था हँस के बोली "बड़े अचरज की बात है, दरिद्री भोंसले को मेरी इकलौती बेटी से अपने लड़के की सगाई की बात कहते लाज न आई? भला कुछ तो सोच विचार के कहते! जब मालोजी ने सब बातें सुनीं तो उस अभिमानी के आधीनी में नौकरी करना उचित न जान नौकरी छोड़ धन कमाने की लालसा से दोनों भाई फिर वेरूलग्राम में लौट आये और किसानी करने लगे। मालोजी बड़ा बड़े नेम धर्म्म से अपना समय बिताने लगे। सन् १५०२ ई० में माघ की पूर्णिमा चांदनी रात में खेत की रखवाली में लग रहे थे, छोटा भाई बिठोजी सो रहा था और मालोजी पहरे पर थे। कुछ दूर पर बिजली की चमक सी उन्हें कोई चीज दिखाई दी। उसे देख चकित हो उन्हों ने अपने छोटे भाई को जगा के कहा, सुन के भाई ने कहा "नींद आई होगी इसी से ऐसा धोखा

हुआ है, अच्छा अब आप सोइये मैं जागता हूं"। सोते ही मालोजी ने स्वप्न देखा मानो भगवती कह रही हैं कि मैं तुम पर प्रसन्न हूं इसी से बिजली रूप में तुम्हें दर्शन दिया है। फलाने स्थान में सात गगरी मोहर है तुम निकाल लो तुम्हारी सब लालसा पूरी होगी और सत्ताइस पीढ़ी तक तुम्हारा वंश अखण्ड राज्य करेगा, इत्यादि कह देवी अन्तर्धान हो गईं मालोजी ने जाग के सब बातें छोटे भाई से कहीं। दूसरे दिन निर्दिष्ट स्थान को खोद मोहरों से भरी गगरियां निकाल श्रीगोन्द ग्राम को चले गये और पूर्वपरिचित, वणिक प्रधानशेषोवा नायक से मिल अपना सब हाल कह सुनाया--वह सुन के बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला मैं बहुत दिनों से जानता हूं कि आप लोग बड़े ईश्वर भक्त सज्जन पुरुष हैं, अच्छा आप यहां रहिये और जो कुछ काम मेरे लायक होगा मैं खुद भी कर दिया करूंगा। थोड़ेही दिनों में मालोजी ने इन्हीं की सहायता से एक हजार मनुष्यों की सेना और उन सभों का असबाब ठीक कर लिया और अपने साले (दीपाबाई के भाई) फलटनकर नमालकर जगपाल से दो हजार घुड़सवार मदद के लिये मांग

भेजे। उस समय उनके पास बारह हजार सवार सदा मौजूद रहा करते थे। उन्हों ने दो हजार सवार भेज दिये और साथही कहला भेजा कि जिस समय जो काम मेरे लायक हो कहला भेजना मैं मदद के लिये हाजिर हूं॥

मालोजी ने चटपट एक हजार अपनी और दो हजार अपने साले की भेजी घुड़चढ़ी सेना ले औचक लूखजी जादव के जागीर को जा घेरा, यह सुनते ही मुसल्मानों ने इस चढ़ाई का कारण पूछ भेजा जिस के उत्तर में उन्हों ने लिख भेजा कि पहिले जादव राव ने अपनी लड़की की सगाई मेरे पुत्र से बीच सभा में मंजूर की थी इस बात के जानकार उनके सभा में बैठने वाले कुल लोग हैं पर अब उस सगाई को वे तोड़ते हैं, इसमें बिरादरी में मुझे बड़ा अपमान सहना पड़ता है। अगर मेहरबानी कर के आप इस सगाई को करवा दें तो अभी हम अपनी सेना ले के लौट जायँ। यह सुन नवाब ने जादवराव से जोर दे के सगाई मंजूर करवा दी और बड़े धूमधाम से ब्याह हो गया॥

इस बिवाह में मालोजी ने हिन्दू मुसल्मानों की ऐसी खातिरी की कि सब लोग बड़े प्रसन्न हुए। इस

पर प्रसन्न हो राज के प्रधान २ लोगों ने मालोजी को राजा की उपाधि दी और सिकनारी और चाकान के किले और उनके आधीन जागीरों की उगाही का भार भी उन्हीं को सौंपा।

ई० १६२० में अहमदनगर राज्य की धीरे धीरे अवनति होने लगी जिसे देख लूखजी जादव ने सम्राट शाहजहां का ध्यान इसकी ओर लौटाया। सन् १६२८ ई० में ये लोग दिल्ली गये वहां शाहजहां ने इन लोगों की बड़ी खातरी की और छ: हजार सवारों का मालिक उन्हें बना दिया॥

एक समय निजामशाही वंश के दसवें बादशाह बहादुरशाह की मृत्यु के उपरान्त राज में बड़ा गड़बड़ मचा। यह सुन शाहजी शीघ्रही अहमदनगर में लौट आये और भाग्य क्रम से शाहजी बहादुरशाह के नाबालिग लड़कों के वजीर बन गये। यह लूखजी जादव को भला न लगा और उन्हों ने वहां का रहना पसन्द न किया। गुपचुप शाहजहां को लिख भेजा कि चटपट वे दौलताबाद पर अपनी चढ़ाई कर दें। बादशाह ने उनका कहना मान सेनापति मीरजुमला को साठ हजार सेना देकर दौलताबाद

भेज दिया और उन्हों ने नर्मदा के तट पर छावनी डाल दी। यह सुन शाहजी ने उन्हें रोकने के लिये अपनी सेना तो भेजी। पर ये लोग थोड़े थे इससे हार खा के लौट आये और नवाब के परिवार वालों के साथ कल्यानभिंडी के मावली किले में रह अपनी तैयारी करने लगे। पर लूखजी ने जो शाही फौज में जा मिले थे इनका पीछा कर माहुलीगढ़ को जा घेरा। शाहजी छः महीने तक तो किला बचाए रहे पर अंत जब उन्हें मालूम हो गया कि इस लड़ाई का मूल कारण यह है कि मेरा वजीर होना लूखजी को न भाया और उसी ईर्षा से यह लड़ाई लगी है तब लाचार उन्होंने ऐसी नौकरी को छोड़ देनाही उचित मान बीजापुर के राजा के यहां अपनी नौकरी की प्रार्थना कहला भेजी। बीजापुर के दीवान मुरार जगदेव ने राजा की आज्ञा से उन्हें बुला भेजा और उन्हें दर्बार में बड़ा आदर सत्कार मिला॥

एक दिन शाहजी के बड़े लड़के छः हजार घुड़-चढ़ी फौज के साथ सात महीने की गर्भिणी जिजी बाई को संग ले के बड़ी वीरता से लूखजी को

सेना के बीच से निकल भागे। लूखजी भी अपने दामाद को पकड़ने के लिये उनके पीछे अपनी सेना ले के दौड़े। बहुत दूर तक तो वह भागाभाग निकले चले गये और यह न पकड़ पाये अब कुछ दूर जा के घोड़े पर दौड़ते २ जीजीबाई के पेट में अत्यन्त पीड़ा उठी और आगे जाने की शक्ति न रही, लाचार शाहजी एक स्थान में सौ सवारों के बीच जीजी बाई को रख आप आगे निकल बीजापुर पहुँच गये। उधर पीछे से लूखजी की भी सेना आ पंहुंची। स्वयम् पिता ने अपनी गर्भवती कन्या को नजर कैद कर लिया और सिउनेरीगढ़ में भेज दिया। इधर बीजापुर और कर्नाटक में युद्ध हो रहा था। इस युद्ध में शाहजी ने बड़ी वीरता दिखाई जिससे प्रसन्न हो उन्हें बीजापुर दर्बार ने कुछ जागीर दे दी थी॥

इधर सिउनेरीगढ़ में शिवा भवानी की एक मूर्ति थी, जीजीबाई इनकी बड़ी भक्ति से सेवा पूजा किया करती थीं और बड़ी प्रार्थना किया करती थीं कि मेरे गर्भ से ऐसा पुत्र हो जो प्रसिद्ध वीर और सच्चा हिन्दू हो। एक दिन रात को उसने सुपना देखा कि स्वयम् महादेव जी आ के कह रहे हैं-कि तुम्

पर मैं बड़ा प्रसन्न हूं परन्तु स्वयम् मैंने ही तेरे गर्भ में आ के जन्म लिया है। मेरे जन्म कि १२ वर्ष तक तू मुझे आंखों से ओट न कीजियो मैं जन्म ले के अनेक अलौकिक कार्य्य करूंगा॥

दूसरा अध्याय।

(शिवाजी का जन्म और बाल अवस्था की कथा)

प्रभव नाम सम्वत् सर के वैशाख शुक्ल २ वृहस्पति वार, सन् १६२७ ईसवी के मई महीने में पूने से पचास मील उत्तर सिउनेरी गढ़ में शिवाजी का जन्म हुआ। शाहजी का प्रेम अपने बड़े बेटे शम्भूजी ही पर अधिक था, इसलिये शम्भूजी को तो सदा वह अपने साथ रखते परन्तु शिवाजी अपनी माता ही के साथ रहा करते थे॥

शिवाजी के जन्म के तीन वर्ष उपरान्त शाहजी ने तुकाबाई नाम की एक मरहठिन से विवाह किया। दूसरा विवाह करने के कारण जीजीबाई से शाहजी को अनबनत होने लगी, उस समय शाहजी को

अवस्थिति करनाटक में थी। शाहजी ने जीजीबाई को और निज पुत्र शिवाजी को अपनी पूना की जागीर में भेज दिया और दादाजी कर्णदेव नामी एक सुचतुर मनुष्य को उनकी रखवाली और पूना की जागीर के सम्भाल के लिए उनके साथ कर दिया॥

दादाजी कर्णदेव बड़े ही सुचतुर, कार्यदक्ष और प्रभुभक्त थे। पूना में आकर दादाजी कर्णदेव ने जीजीबाई और शिवाजी के रहने के लिए एक अति उत्तम महल बनवाया कि जिसमें शिवाजी ने अपने बचपन के दिन बिताये थे। शिवाजी को विद्याशिक्षा देने के लिये दादाजी ने बहुत कुछ यत्न किया परन्तु पढ़ने लिखने में शिवाजी का चित्त जमता नहीं था और न इनकी इस ओर रुचि ही थी। इनकी स्वभाविक चित्तवृत्ति सिपाहगिरी की ओर ही अधिक थी। इसलिये दादाजी ने शिवाजी को पढ़ाना लिखाना छुड़ा तीरन्दाजी, नेजेबाजी, घोड़े पर चढ़ना आदि सिपाहगीरी के फन में अच्छी शिक्षा दी कि जिसे शिवाजी ने बड़े परिश्रम और चाह से सीखा। कुछ दिनों के उपरान्त शिवाजी युद्ध विद्या में पूर्ण विशारद हो गये। विद्या विषय में तो शिवाजी अपना नाम

भी कठिनता से लिखते थे परन्तु अपने सनातन धर्म्म कर्म्म में वह बड़े ही नैष्ठवान और दृढ़ थे। महाभारत, रामायण आदि पुराण इतिहासों पर शिवाजी का ऐसा दृढ़ अनुराग था कि जहां कहीं महाभारत आदि की कथा होती वहां अवश्य ही जाते और भक्ति पूर्व्वक ध्यान लगा के सुनते। प्राचीन आर्य्य वीर पुरुषों की वीरता को सुन सुन उन्हें बड़ा ही आनन्द होता और हृदय में वीरता की उत्तेजना हो आती। गौ ब्राह्मण की रक्षा और सेवा में वह सदा सयत्न रहा करते थे। और ज्यों ज्यों इन बातों की उनके हृदय में दृढ़ता होती जाती थी, त्यों त्यों परधर्म्मी मुसल्मानों पर कोप और घृणा बढ़ती जाती थी। शिवाजी की यह दृढ़ प्रतिज्ञा थी कि हिन्दूधर्म्म द्वेषीओं को नाश कर सारे भारत पर निज धर्म्म को दृढ़ता से फैला सदा गौ ब्राह्मण की रक्षा और सेवा करें। बड़ी बड़ी कठिनाइयों और विपदाओं को झेलने पर भी उनकी स्वधर्म्मनिष्ठा दिनों दिन यों बढ़ती जाती थी कि जैसे बारबार तपाने से स्वर्ण की जिलो होती है। अपने जीवन के अन्त दिन तक भी उनके हृदय से अपनी टेक न भूली।

मावल पर्व्वत के रहनेवाले मावली जाति पर शिवाजी का बड़ा विश्वास और स्नेह था। क्योंकि ये लोग बड़े उद्योगी, कामकाजी, साहसी, परिश्रमी और लड़ाकू होते थे, मावला सम्प्रदाय हिरडस,पवन, अन्दर आदि बारह भाग में विभक्त थी। इन्हीं माव-लोयों के लड़कों को साथ लेकर शिवाजी जंगल पहाड़ों पर घूमा करते और शिकार खेलते थे। योंहीं घूमते २ दूर दूर तक के पहाड़ी और झाड़ियों के राह घाट से शिवाजी खूब ही परिचित हो गये थे। धीरे २ इनके साथियों का जमाव बढ़ता गया और कुछ दिनों में उन्होंने अपने आधीनी में एक छोटीसी पल्टन बना ली।

उन्नीस वर्ष अर्थात् सन् १६४६ ई० में उन्होंने मोर प्रदेशस्थ तोरन का किला जीत लिया। यह एक ऐसे विकट पहाड़ के ऊपर था कि जिस पर पहुंचना बड़ा ही कठिन था। इसी समय से उनके बालसंहाती तानाजी मालसुरे, सुरेराव कांकड़े,वाजी फसलकर, शेषजी कङ्क आदि वीरों को अपने साथ मिला अनेक दिनों तक युद्ध करते रहे।

इस गढ़ की मरम्मत करती समय उन्हें बहुत धन गड़ा हुआ मिला था।

सन् १६४८ में शिवाजी ने एक नया किला बनाया और उसका नाम रामगढ़ रक्खा। योंहीं बीजापूर के राजा की कई एक गढ़ीयों पर अपना अधिकार जमा लिया। शिवाजी की ऐसी काररवाइयों को देख बीजापूर सरकार ने क्रोधित होकर शाहजी के पास करनाटक में पत्र भेजा कि तुम अपने पुत्र को हटको नहीं तो इसका परिणाम तुम्हारे लिये खोटा होगा। इसके उत्तर में उन्होंने लिख भेजा कि इस विषय में मैं कुछ नहीं जानता और न मैं अपने पुत्र शिवाजी से कोई सम्बन्ध ही रखता हूं। परन्तु दादाजी को शाहजी ने इस आशय का एक पत्र लिखा कि शिवाजी को ऐसी उद्दण्डता से रोकें। दादाजी के हटकने पर शिवाजी ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया कि मैं तो गौ ब्राह्मण तथा दीन किसानों की रक्षा करता हूं कोई कुकर्म नहीं करता। कुछ दिन के उपरान्त सन् १६४७ ई० में दादाजी कोंडदेव को सत्तर वर्ष की उम्र के प्रारम्भही में बुढ़ापे ने आ दबाया और बुढ़ापे के रोग ने प्रबल रूप धारण किया उन्होंने अपने जी में समझ लिया कि अब मृत्यु में थोड़े ही दिन बाकी रह गये हैं। यह सोच

एक दिन उन्होंने शिवाजी को अपने पास बैठा के कहा देखो शिवाजी अब मैं बहुत थोड़े दिन का मेहमान हूं इसलिये मेरी इतनी बड़ी उम्र में अनेक अवस्थाओं में रह के जोकुछ मैंने संसारी ज्ञान उपार्जन किया है उन्हें तुमसे कहा चाहता हूं। मेरा उनके कहने का यह मतलब है कि यदि तुम मेरी कही बातों को मानोगे तो इस जन्म में यश और कीर्त्ति पा के परलोक में भी सुख पाओगे। मेरा यह कहना है कि—लड़के शय्या पर से उठ के जगतपति जगदीश्वर के नामों का स्मरण वंदन कर, अपने को इस असार संसार में मान सुख दुःख में चित्त को दृढ़ता से सब काम करना, कभी क्रोध और मोह में आ के पक्षपात से किसी का विचार न करना, अथवा एक पक्ष वाले की बात सुन के कोई विचार करना अनुचित है, वैसे ही कभी सत्य को न छोड़ना क्योंकि जगत में जो कुछ है वह सत्य ही के आधीन है और सत्य ही सब धर्मों की जड़ है। कभी अपने विभव पर अभिमान न करना। जो लोग अपने प्रचुर धन, शक्ति या देहबल पर अभिमान करते हैं, जग में भले लोग उन पर घृणा करते हैं। जबे विचार

करने बैठो तो हठ न करना, क्योंकि ऐसा होना सम्भव है कि अपने विचार में तुम भूले हो, हम सब समझते हैं, चित्त में ऐसा कभी न लाना। बुद्धिमान लोग इस पर घृणा करते हैं। खुशामद करने वालों की प्रशंसा पर कभी प्रसन्न न होना, धनवान लोगों के ये परम शत्रु होते हैं यथार्थवादी पण्डितों का सम्मान करना और यथासामर्थ्य धन से उनकी सेवा करना, क्योंकि वेही तुम्हारे सच्चे मित्र हैं। यथा सामर्थ्य देश पर्य्यटन करना और अनेक प्रकार के विषयों का ज्ञान प्राप्त करना। दूसरे अच्छे देशों से अपने देश को तुलना कर उससे भला बुरा विचारना। भोजन और पहिरने में बड़ा आडम्बर न करना। इनमें मूर्खों की शोभा है। भांग, अफीम, गांजा, शराब का अमल न करना, न ऐसे अमलीयों का संग करना। संसार में जितने प्रकार के पाप कहे हैं उन सभों की जड़ अमल का करना और परस्त्री गमन ही है। इन दोनों कर्म्मों के करने वालों का जग में अपयश होता है, अनेक गुणों का लोप होता है और शरीर में अनेक प्रकार के रोगों का सञ्चार हो जाता है, अन्त या तो आत्मघात से अथवा रोग भोग के बड़े दुःख

वे लोग दुर्लभ मनुष्य देह खो बैठते हैं। आहार, निद्रा प्रभृति को जितना घटा सको उतना ही अच्छा है। अधिक भोजन से अनेक प्रकार के रोग होते हैं और ज्यादा से बहुत कार्य्य में हानि होती है। इतना भोजन करना चाहिये जिसमें भोजन के उपरान्त घोड़े की सवारी पर दो कोस जा सको। छोटे से काम को भी किसी पर छोड़ कर निश्चिन्त न हो जाना। अपने आंखों से देखने का अभ्यास करना।

अपने आधीन रहने वालों का जहां तक हो सके कसूर माफ करना चाहिये, एक साथ ही उनको नौकरी न छुड़ानी चाहिये। लोक भेद से दंड भेद भी करना चाहिये। जहां तक मुमकिन हो सके प्रजा के धन बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिये इसी से राजा का राज्य दृढ़ होता है। जिस राजा की प्रजा मूर्ख और दरिद्र होती है उस राजा का राज्य थोड़े ही दिन तक रहता है। खर्च अपना घर देख के करना। सूम के ऐसा जमा करना और मौके पर विरक्त के ऐसा खर्च करना। नौकरों में जिसकी जैसी मर्य्यादा हो उससे वैसा बर्ताव करना। अपने सुख विलास के लिये प्रजा से एक कौड़ी न लेना।

जब ईश्वर जैसी अवस्था में रक्खे तब उसी अवस्था में सन्तोष पूर्व्वक रहना, पर अपना धर्म्म न छोड़ना और न शिष्टाचार से बाहर होना। जब तक कोई विचारा हुआ काम पूरा न हो जाय तब तक सब लोगों के आगे प्रकाश न होने देना। राजनीति के पंडितों ने कहा है—"जो मेरी मूंछ के बाल भी मेरी मन्त्रणा सुन लें तो उन्हें भी मुड़वा डालूं" इसके यह मतलब नहीं है कि जो मैं आवे सो करो, नहीं अपने से बुद्धि विद्या में जो, बड़ा हो उससे सलाह करके काम करो। राजा चाहे कितना ही बुद्धिमान हो तौभी अच्छा मन्त्री चाहिये।

आबाजी सोनदेव, सम्भाजी कावजी, श्यामराज-पन्त, नेताजी पालकर, रघुनाथ पन्त, नाहर बल्लाल, मोरोपन्त पिङ्गले, बालाजी, आबजी नीराज पन्त, नीलोजी कारकर, सोमनाथ पन्त, गोमाजी नायक, अन्नाजी दत्तो, बालकृष्ण मजुमन्त, हंबाजी मोहिते, कार्टोकी, गुज्जर, विट्ठल पिलदेव, शोपाज्ञा नायक प्रभृति लोग सब विद्या विनय सम्पन्न प्रभु भक्त, क्लेश सहने वाले, अपने धर्म्म में दृढ़, दूरदर्शी, स्वदेश हितैषी और गौ ब्राह्मण तथा अपने देश के लिये प्राण देने

वाले हैं। ये सब लोग शूर वीर हैं, जो तुम इन लोगों को आदर सत्कार से रक्खोगे तो बड़ा सुख पाओगे।

इत्यादि अनेक राजनीति के वाक्यों से शिवाजी को उपदेश किया। पर दिनों दिन उनका रोग बढ़ता ही गया। शिवाजी, उनकी स्त्री और माता ने दिन रात बैठ के उनकी सेवा की अन्त सब विफल हुआ। मृत्यु के कुछ पहिले दादोजी को मूर्छा आई, मूर्छा छूटने पर शिवाजी को बुला के अपने बहुत पास बैठा के उन्होंने कहा—देखो शिव! तुमने गौ, ब्राह्मण, अपना धर्म्म और अपने देश को मंगल कामना रूपी जो कार्य्य करना विचारा है मेरी समझ में इससे बढ़ के जग में दूसरा सत्कार्य्य कोई नहीं है, इससे पूरा भरोसा है ईश्वर तुम्हारी सहायता करेंगे।

सन् १६४८ ई० में दादाजी कर्णादेव के मरने के उपरान्त शिवाजी ने पिता के जागीर का कार्य्य अपने हाथ लिया और दो ही वर्ष में अपना अधिकार तीस मील के फैलाव में जमा लिया। खजाने का तीन लाख "पैगोडा* बिजापुर को जा रहा था

* पेगोडा = एक प्रकार का मदराजी सिक्का था जिसका मूल्य ८ सिलिङ्ग अर्थात् साढ़े छ रुपये होते थे।

राह में शिवाजी ने लूट लिया और किसी पहाड़ी गुप्त स्थान में जा छिपाया। इसी अर्से में शिवाजी ने इसी वर्ष अर्थात् १६४८ ई० में बीजापुर की सरकार से कल्याण की सूबेदारी छीन ली। तब तो बीजापुर की सरकार ने शाहजी को करनाटक में कैद कर लिया और कहा कि जब तक तुम्हारा लड़का अपने उपद्रव से बाज न आवेगा तुम्हें कारागार में रहना पड़ेगा और अत्यन्त कठिनाई से तुम्हारे प्राण लिये जायंगे। शाहजी ने बहुत कुछ कहा और सत्य कहा कि मैंने निज पुत्र शिवाजी से कोई भी वास्ता नहीं रक्खा है पर कुछ सुनाई न हुई।

बाजीघुरपुर नाम के एक महाराष्ट्र ने विश्वास घात से शाहजी को गिरफ़ार करवा दिया था। उस समय शिवाजी की बाईस वर्ष की अवस्था थी उन्हों ने सोचा कि जब तक पिता कैद से न छूट लें शान्त रहना चाहिये। ऐसा विचार कर शिवाजी लाचार हो कुछ काल तक शान्त रहे। जब सुना कि शाहजी कैद से छूट गये तो पुनः लूट मार करने लगे और जावली के स्वामी को मार उसका राज्य अपने अधिकार में कर लिया।

सन् १६५७ (१५७८ ईमलब्बी नाम सम्वत्सर के जेष्ठ शुक्ल द्वादसी) को शिवाजी की बीरपत्नी सइबाई के राजगढ़ में एक पुत्र हुआ उसका नाम सम्भाजी रक्खा। शिवाजी ने पुत्रोत्सव पर खूबही जी खोल के दान पुन्य, सेवा अर्चना की थी॥

सन् १६५७ में जिस समय औरङ्गजेब बीजापुर से युद्ध में प्रवृत्त हुये उस समय शिवाजी ने औरङ्गजेब को लिख भेजा कि मैं आपकी सेवा करने और वीजा-पुर से युद्ध करने में राजी हूं। शिवाजी के इस कहने में औरङ्गजेब आ गया और बीजापुर राज्य का जितना हिस्सा शिवाजी ने दखल कर लिया था औरङ्गजेब ने उन्हें लिख दिया। परन्तु बीजापुर से औरङ्गजेब की फौज के लौट आने पर शिवाजी मुगलों के अधि-कृत स्थानों पर भी चढ़ाई करने और उन्हें अपने अधिकार में लाने लगे। शिवाजी जुनेरी की रिया-सत से तीन लाख पेगोड़ा लूट लाये। जब शिवाजी को अधिक सैन्य रखने की आवश्यकता हुई, इसलिये उन्होंने अपनी सैन्यसंख्या बढ़ाई। उसी समय सात सौ पठानों को बीजापुर की सरकार ने अन्याय पूर्वक छुड़ा दिया था। शिवाजी ने उन पठानों को अपनी

सेना में भरती कर लिया और उन्हें राघोबल्लाल नामक मरहठे सरदार की आधीनी में कर दिया। शिवाजी ने विचारा कि प्रबल औरङ्गजेब से बिना मिले भली प्रकार कार्य्यसिद्धि न होगी इसलिये दूत द्वारा औरङ्गजेब को यह कहला भेजा कि मैं अपने कृत कार्य्यों के लिये बड़ा ही लज्जित और दुखी हूं, परन्तु अब मेरा यह निवेदन है कि यदि कोकन* की जागीर मुझे मिल जाय तो मैं सदा बादशाही अमलदारीयों की रक्षा करता रहूंगा। इधर औरङ्ग-जेब ने विचारा कि महाराष्ट्र देश में इस समय शिवाजी एक अच्छा वीर पुरुष हैं इस लिये उसे मिला रखना ही सलाह है। ऐसा सोच बादशाह ने लिख भेजा कि तुम खुशी से कोकन पर अपना कब्जा करलो। इस आज्ञा को पातेही सन् १६५८ ई० में शिवाजी ने कोकन पर अपनी चढ़ाई की परन्तु दैव-योग से शिवाजी की बहुत सेना मारी गई और अन्त हार हुई। जब से शिवाजी ने युद्ध करना प्रारम्भ किया था, यह हार का पहिला मौका था।

अपने राज्य का अधिकांश हिस्सा शिवाजी द्वारा

* कोकन = सह्याद्रि के पश्चिम ओर का देश।

अधिकृत होते देख सरकार बीजापूर अलीआदिल-शाह ने शिवाजी को दमन करने के लिये अपने प्रधान सरदार अफजलखां को बारह हजार सवार और पैदल तथा पहाड़ी तोपखाने के साथ भेजा। उस समय शिवाजी की अवस्थिति प्रतापगढ़ में थी शिवाजी साम, दान, दण्ड, भेद आदि राजनीति में बड़े ही दक्ष थे। उन्होंने अफजलखां से कहला भेजा कि मेरी क्या ताब है कि आप ऐसे वीर पुरुष से मैं युद्ध ठानूं या युद्ध करने का साहस करूं। इसलिये मेरी आप से यह प्रार्थना है कि यदि आप मेरे कृत कार्यों को भूल जावें तो आज तक मैंने आपके जितने किलों पर दखल किये हैं वे सब छोड़ दूं।

शिवाजी की इस चापलूसी में आ अफजलखां ने बिचारा कि बिकट जङ्गल पहाड़ों पर सेना ले आकर शिवाजी से लड़ना बड़ा ही कठिन है, फिर न जाने जय हो या पराजय, इसलिये जब कि शिवाजी स्वयम् हमसे क्षमा मांगता है और किलों पर से अपना अधिकार भी हटा लिया चाहता है तो इससे बढ़ कर और क्या चाहिये। ऐसा बिचार अफजलखां ने गोपीनाथ पन्त नामक एक महाराष्ट्र ब्राह्मण को

शिवाजी के पास भेजा। गोपीनाथ प्रतापगढ़ के नीचे किसी एक ग्राम में जाकर टिके और शिवाजी को अपने आने का सन्देसा कहला भेजा। इस समाचार को सुनते ही शिवाजी किले पर से उतर आए और गोपीनाथ पन्त से भेंट की। गोपीनाथ ने शिवाजी से कहा,—"आपके पिता शाहजी से अफजलखां की बहुत दिनों से मित्रता चली आती है, इसलिये वह अपने मित्र के पुत्र से बैर नहीं बढ़ाया चाहते। उनकी इच्छा यह है कि आप को एक जागीर देकर इस झगड़े का निबटेरा कर डालें" शिवाजी ने बड़ी नम्रता से इसका उत्तर दिया कि मैं तो बीजापुराधीश का एक छोटा सा सेवक हूं, यदि मुझे एक जागीर मिल जाय तो मैं उसी से अपना गुजारा करूं और फिर मुझे इस टंटे बखेड़े से क्या लाभ, शिवाजी की ऐसी मीठी मीठी बातों को सुन पंथजी मोहित हो गये। शिवाजी ने गोपीनाथ पन्त के टिकने के लिये एक स्थान नियत कर दिया और उनकी अनुमति से गोपीनाथ के साथीयों ने कुछ दूरी पर अपना डेरा डाला। एक दिन सुनसान अन्धेरी रात के समय शिवाजी अकेले पन्तजी के डेरे में आए और

अपना परिचय देकर बोले,—"मैंने प्रतिज्ञा की है कि कण्ठगत प्राण रहते भी मैं गो ब्राह्मण की रक्षा करूंगा। हमारे देवधर्म विरोधी यवनों के गर्व को खर्व करने के लिये भवानी ने मुझे आज्ञा दी है। भगवती की आज्ञा से मैं इसमें प्रवृत्त हुआ हूं। आप भी ब्राह्मण हैं आपको भी उचित है और यह आप का धर्म है कि मेरी सहायता करें। हमें पूरी आशा है कि हमारी आपकी मित्रता जन्म भर निभ जायगी"। यों कह शिवाजी ने कहा कि मैं एक गांव आपको जागीर में दूंगा। पन्यजी इस तरुणवीर के असीम साहस, अलौकिक विलक्षण देवभक्ति और अपरिमेय-स्वदेशहितैषिता से मुग्ध हो गये। शिवाजी ने उस समय उनपर कुछ ऐसी मोहनी सी डाली और बातों का जाल फैलाया कि उन्हें यह कहते ही बन आया कि जीते जी मैं तन मन से आप का साथ दूंगा और कदापि आप से विरुद्ध आचरण न करूंगा। शिवाजी की आशा फलवती हुई, पन्यजी ने उनके साथ देने की दृढ़ प्रतिज्ञा की, गोपीनाथ पन्य के कहने से अफजलखां ने शिवाजी से भेंट करना स्वीकार किया। भेंट करने का यह नियम हुआ कि किले के नीचे

किसी एक मैदान में डेरे के अन्दर भेंट हो और अफजलखां केवल एक अर्दली के साथ आवें और इसी प्रकार से शिवाजी भी आकर भेंट करें। अफजलखां ने इसे स्वीकार किया। प्रतापगढ़ और अफजलखां के लश्कर के बीच बड़ी ही सघन झाड़ी थी। शिवाजी ने अफजलखां के डेरे से अपने डेरे तक बहुत ही पतला घूम घुमाव का एक रास्ता झाड़ी काट के साफ बनवा दिया। रास्ते के दोनों ओर सघन झाड़ियां ज्यों की त्यों रहीं निर्दिष्ट समय करार हो पर पालकी पर सवार हो अफजलखां शिवाजी के बताये हुए डेरे में आके ठहरे और मुलाकात के लिये शिवाजी को बुला भेजा, इस पर शिवाजी ने कहला भेजा कि आज थके मांदे आप आये हैं आज की रात डेरे में आराम कीजिये कल मैं आप से अवश्य मुलाकात करूंगा। यह सुनै ज्यों त्यों अफजलखां ने रात बिताई दूसरे दिन शिवाजी ने अपने सब सर्दारों को भरपूर शिक्षा देके सब प्रकार चैतन्य कर भोजन के उपरान्त अपनी कुलदेवी और माता पिता के चरण को स्मरण कर एड़ी से गरदन तक लोह कवच पहिर ऊपर से साधारण वस्त्र पहिर लिया जिससे भीतर का कवच

बिलकुल ढक गया। योंही मस्तक पर भी फौलादी टोप पहिर, कमर में भवानी नाम की तलवार लटका, आस्तीन के अन्दर "बघनखा *" लगा सम्भाजीकाजी और जिउमहला को साथ ले अफजलखां से मिलने चले। अफजलखां ने दूर से आते देख अपने पास खड़े हुए मनुष्य से पूछा, 'इनमें शिवाजी कौन है?' उसने उँगली उठा के कहा—वह जो श्याम रंग का नाटा सा मनुष्य है, जिसको अजानुबाहु और कटि में लटकती हुई तलवार है जो आगे आगे आ रहे हैं वही शिवाजी हैं। लम्बे चौड़े मोटे ताजे, अफजलखां नाटे से शिवाजी को अपने मुट्ठी में मान जी में बड़े प्रसन्न हुए। अकेले शिवाजी अफजलखां से मिलने खेमे के अन्दर गये। उन्हें आते देख उठके अफजलखां गले मिलने को ज्योंही आगे बढ़े और शिवाजी से गले मिले त्योंही उनकी गरदन निज बांह से जकड़ बड़ी फुर्ती से उनपर तलवार चलाई, पर शिवाजी के कपड़े के अन्दर तो फौलादी कवच था, इससे उधर उनपर तलवार की वार का कुछ भी असर न

* एक प्रकार का अस्त्र जो बाघ के पंजे के आकार का फौलादी होता है, दस्ताने में लगा और छिपा रहता है सामान्य झटके से नख बाहर निकल आते हैं यह नख ठीक बाघ के नखों के सदृश चोखे होते हैं।

हुआ पर इधर साथ ही बड़ी फुर्ती से शिवाजी ने दाहिने हाथ के बघनखे से अफजलखां की बखी फाड़ डाली, उसके लगतेही मरे मरे, दौड़ो दौड़ो की आवाज होतेही अफजलखां ती वहां ही गिर के मर गये पर उस चिल्लाहट को सुन सैयद बण्डा नाम का पठान और गोविन्द पन्थ नामक एक ब्राह्मण कर्मचारी उस की मदद को खेमे के अंदर दौड़ के घुसे, उधर शिवा जी के दोनों सिपाही कावजी और जिउमहला शिवाजी के पास पहुंच गये। सैयद ने शिवाजी पर वार करना विचारा पर पीछे से सम्भाजी ने एकही हाथ में उसका काम खतम किया। गोविन्द पन्थ तरवार खींच के आगे आया चाहती था यह देख सम्भाजी ने कहा "तुम ब्राह्मण हो इसलिये महाराज के निकट अवाध्य हो अतु अपनी जान ले सीधी तरह घर जाओ इतने ही में जिउमहला ने. पीछे से आके उसे पकड़ एकही झटके में उसके हाथ से तर-वार छीन ली और उसे छोड़ दिया। लिखने में इतना बढ़ गया पर उस समय वे सब बातें चुटकी बजाते में हो गई थीं। अफजल खां के मुंड को शिवाजी काट के लेआये थे॥

यह झगड़ा सन् १६५९ ई० १५५ शक के विकारी नाम सम्वत्सर क्वार शुक्ल ७ शुक्र के दिन हुआ था ॥

शिवाजी ने पूर्वही झाड़ी के मध्य से जो रास्ता कटवाया था उसके दोनों ओर झाड़ियों में मावली जाति के सिपाहियों को छिपा रक्खा था संकेत करते ही वे लोग निकल आये और बीजापूर के लशकर पर टूट पड़े कुछ क्षण तक दोनों दल में गहरा युद्ध होता रहा पर शिवाजी के बीरों के सम्मुख वे न टिक सके अन्त भाग निकले। शिवाजी ने उन भागते हुए सिपाहियों का पीछा न किया। इस युद्ध में शिवाजी ने आश्चर्य विजय पाई, कि जिसकी प्रशंसा में भूषण कवि ने कहा है—

उतै बादशाह जू के गजन के ठट्ट छुटे,
उमड़ि घुमड़ि मतवारे घन भारे हैं।
इतै शिवराज जू के छूटे सिंहराज कुम्भ,
करिन बिदारि फारि चिक्करत कारे हैं।
फौजें शेष सैयद मुगल औ पठानन की,
मिले अफजल काहू मार न सँभारे हैं।
हद्द हिन्दुआन की बिहद्द तरवारि राखि,
कैय्यो बार दिल्ली के गुमान झारिडारे हैं॥

इस लड़ाई में शिवाजी के हाथ नीचे लिखी चीजें लगीं—

६५ हाथी ४००० घोड़े १२०० ऊँट २०० गठड़ी कपड़ा ७ लाख रुपये का सोना चांदी, इसके सिवाय बहुत कुछ गोला, गोली बारूद और तोप बन्दूकें थीं॥

इस युद्ध के बादही शिवाजी ने राजगढ़ में निज माताजी को विजय के समाचार भेजे, जिसे सुन उन्हों ने बड़ी खुशी मनाई और अनेक मनौती चढ़ाई॥

तीसरा अध्याय।

(पनैलागढ़ विजय, पिता के बैरी से पलटा और पिता की भेंट)

सह्याद्रि के पश्चिम समुद्र पर्य्यन्त भूखण्ड को कङ्कन राज्य कहते हैं। बीजापूर की सेना को पराजय करने के उपरान्त कोकन (कङ्कन) प्रदेश का अधिकांश शिवाजी ने अपने अधिकार में कर लिया था। इसके उपरान्त शिवाजी ने पनैलागढ़ पर चढ़ाई की। यह किला बीजापूर की अमलदारी में अभेद्य दुर्ग माना जाता था। इस गढ़ के विजय करने में शिवा

जो में अपूर्व कौशल और असीम साहस का परिचय दिया। शिवाजी ने सलाह कर अपने कई एक सेना नायकों से बनावटी विवाद किया और आठ सौ सिपाहियों के साथ कई एक सेनानायक शिवाजी के दल से निकल गये और पनेला दुर्ग के किलेदार से जा मिले और उनसे नौकरी करने की प्रार्थना की। किलेदार ने इन लोगों के कौशल को बिना समझे किसी से नौकर रख लिया। इधर शिवाजी ने गढ़ पर चढ़ाई की। गढ़ के एक ओर कुछ ऊँचे ऊँचे वृक्ष थे। शिवाजी से छूट के जिन सिपाहियों ने गढ़ में नौकरी करली थी अवसर पा रात्रि के समय शिवाजी के दलवालों को संकेत किया। इशारे के पातेही शिवाजी के वीरगण पेड़ों पर से चढ़ के किले में कूद गये और बड़ी वीरता से युद्ध कर गढ़ का द्वार खोल दिया। कुछ क्षण तक तो घोर युद्ध हुआ अन्त शिवाजी ने गढ़ फते कर लिया। इसी पर भूषन ने कहा है:—

छूटत कमानन के तीर गोली बानन के,
मुशकिल होत मुरचानहू की ओट में।
ताही समै शिवराज हुकमि कै हल्ला कीन्हे,
दावा बांधि पर्‌यो हल्ला बीर भट चोट में।

भूषन भनत तेरी हिम्मत कहां लो गिनौं,
किम्मत कहां लग है जाके भट जोट में।
ताव दै दै मूछन कँगूरन मै पांव दै दै,
घाव दै दै अरिमुख कूद परे कोट में।

इसी प्रकार बारम्बार के विजय से शिवाजी की ऐसो प्रसिद्धि हो गई कि दूर दूर से हिन्दू वीरगण आ आकर शिवाजी का दल पुष्ट करने लगे। शिवाजी का रिसाला दूर २ तक धावा मारने और मुसल्मानी रियासतों को लूटने लगा। शिवाजी का आतङ्क दूर दूर तक फैल गया। लोग डरते और घबड़ाते थे कि न जाने किस दिन किधर से शिवाजी चढ़ धावें। बीजापूर के आस पास तक शिवाजी ने लूट मार मचा दो।

कोटगढ़ ढाहियतु एकै बादशाहन के,
एकै बादशाहन के देश दाहियतु है।
भूषन भनत महाराज शिवराज एकै,
शाहन के सैन पर खग्ग वाहियतु है।
क्यों न होहिं बैरिन की बधू बर बौरिन सी
दौरन तिहारे कहूं क्यों निबाहियतु है।
रावरे नगारे सुने बैर वारे नागरिन,
नैनवारे नदन निवारे चाहियतु है।

शिवाजी की उद्दण्ड वीरता और वैभव को बढ़ते देख कर बीजापूर के बादशाह की क्रोधाग्नि धधक उठी। उसने अपना एक दूत शिवाजी के निकट यह कहके भेजा कि अभी तक अच्छा है यदि तुम हमारी वश्यता स्वीकार करलो। दूत ने आ कर शिवाजी से अपने प्रभु की आज्ञा कह सुनाई। दूत के मुंह से बादशाह के अभिमानपूर्ण वाक्यों को सुन कर शिवाजी ने बड़ी गम्भीरता से कहा, "तुम्हारे स्वामी को मेरे ऊपर आज्ञा करने का क्या अधिकार है? तुम कुशलपूर्वक यहां से चले जाओ नहींतो तुम्हें कष्ट भोगना पड़ेगा"। शिवाजी के इस रूखे उत्तर को सुन दूत बीजापूर लौट आया और अपने स्वामी को शिवाजी का सन्देसा कह सुनाया। दूत के मुंह से अभिमानपूर्ण उत्तर सुन बादशाह को बड़ा ही क्रोध हो आया और इस दर्प को दमन करने के लिये अनेक सैन्यों के सहित स्वयं बादशाह ने शिवाजी पर चढ़ाई की। दो वर्ष लों युद्ध चलता रहा इसमें मरहठों की बहुत सी जागीर बीजापूर के अधिकार में चली गई परन्तु अन्तिम लाभ का भाग शिवाजी की ओर रहा॥

सन् १६५८ में कि जब बीजापूर के बादशाह ने शिवाजी के पिता शाहजी को कैद कर लिया था, उस समय शाहजी को मुधोल का जागीरदार बाजे-घुरपुरा नामक मनुष्य ने विश्वासघात से गिरफ़ार करवा दिया था। गिरफ़ार होने के उपरान्त शाहजी ने अपने पुत्र शिवाजी को लिखा था कि घोरपुरे ने मेरे साथ बड़ा विश्वासघात किया है इसलिये तुम्हारी सच्ची वीरता तो तभी है कि इस दुष्ट से तुम अपने पिता का बदला लो। तेरह वर्ष के उपरान्त जिस समय बीजापूर से युद्ध हो रहा था, शिवाजी को एक ऐसा सुयोग मिला कि पिता का पुराना वैर स्मरण कर घोरपुरे पर चढ़ धाये और सपरिवार घोरपुरे को मार मिटाया, उसके ग्राम में आग लगा दी, उसका नाम निशान न रक्खा। जब शाहजी को यह समाचार मिला तब ऐसे पुत्र से मिलने की उन्हें बड़ीही उत्कण्ठा हो आई। बीस वर्ष के उपरान्त शाहजी अपने पुत्र शिवाजी से मिलने चले। इधर शिवाजी पिता का आगमन सुन बड़े उत्साह और उमङ्ग से अगवानी के हेतु नङ्गे पांव बारह मील तक आये। पिता को देखतेही पृथ्वी पर लोट कर साष्टाङ्ग दंड-

वत प्रणाम किया। प्रेमाश्रु बहाते वात्सल्य और प्रेम से गद्गद हो शाहजी ने प्यारे सपूत को गले से लगा लिया। शिवाजी ने बड़े आगत स्वागत से निज पिता को ला कर गद्दी पर बिठाया और आप पिता की जूती उठा कर खड़े रहे! धन्य वीर शिवाजी! धन्य है तुम्हारी वीरता और पितृभक्ति को। क्यों न हो जो जन निश्चल और निष्कपटता से देव पितृ भक्ति को हृदय में धारण करते हैं वेही इस लोक में धन, जन, लक्ष्मी, यश, विजय को प्राप्त हो परलोक में उच्च पदवी को पाते हैं। महाजनों की महाशयता उनके कर्मों ही से प्रतीति होती है। शिवाजी के शील से बड़े ही प्रसन्न हो कर शाहजी ने आशीर्वाद दिया कि, पुत्र तुम सदा विजयी हो और सदा राज्य लक्ष्मी तुम पर सदय रहें। कुछ दिन रहने के उपरान्त शाहजी पुत्र से विदा हो अपने स्थान को गये। उस समय शिवाजी की पैंतीस वर्ष की अवस्था थी॥

उस समय शिवाजी के अधिकार में समस्त कोकन प्रदेश, कल्याण से गोआ तक और भीमा से वर्द्धा तक था, कि जिस की लम्बाई १३० मील और चौड़ाई १०० मील की थी। शिवाजी के आधीन

उस काल में पचास हजार पैदल और सात हजार सवार थे, जिसमें सब सिपाही प्रभुभक्त, रणकुशल और वीर थे ॥

चौथा अध्याय ।

(एबीसीनीया वाले की लड़ाई, शायस्ता खां को भगाना, मुगलदल की हार, सूरत का लूटना, पिता का श्राद्ध, शिवाजी का राजगद्दी पर बैठना)

शिवाजी सदा युद्ध विग्रह में अपने दिन बिताया करते और उसी से फौज का खर्च चलाते थे। कुछ दिन के उपरान्त पुन: बीजापूर वाले ने एबीसिनीया के रहने वाले रणकुशल सेनानायक को बड़े दल बल से शिवाजी पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। इस बहादुर ने अपनी रणकुशलता से शिवाजी को पनैला दुर्ग में घेर लिया और खूबही लड़ा अन्त भवानीभक्त शिवाजी ने उसे भी परास्त कर विजय पाई। शिवाजी की चतुराई के आगे उसकी वीरता कुछ भी काम न आई और अन्त वह हार कर लौट गया। इसके लौटने पर इसके प्रभु को ऐसा क्रोध हुआ कि उस एबीसी-

मीयावासी सेनानायक को प्राण दण्ड दिया। इस युद्ध के उपरान्त शिवाजी ने बीजापूर वाले से सन्धि कर ली और उसके अधिकार में लूट मार करना छोड़ दिया॥

जिस समय औरङ्गजेब अपने पिता को पदच्युत करने के लिये आगरे चला उस समय उसने अपने कई एक सरदारों को इस अभिप्राय से शिवाजी के निकट भेजा था कि तुम इस कार्य्य मं मेरी सहायता करो। परन्तु वीर शिवाजी इस अन्याय कर्म्म में साथ देने से सहमत न हुये वरन औरङ्गजेब को बहुत कुछ धिक्कारा और उसने जो पत्र भेजा था उसे कुत्ते की पूंछ में बँधवा दिया। दूतों ने लौट कर औरङ्ग-जेब को शिवाजी की कहन सुनाई इस पर औरङ्ग-जेब को बहुतही बुरा लगा और शिवाजी के ओर से उसके हृदय में बैर का अंकुर जम गया। औरङ्गजेब द्वेष से शिवाजी को "पहाड़ का चूहा" कहा करता था॥

उधर औरङ्गजेब अपने बूढ़ पिता को कैद कर आप सिंहासन पर बैठा और इधर शिवाजी ने बीजा-पूर के स्वामी से सन्धि कर ली और वे मुगलों के अधि-कार पर हाथ डालने लगे। औरङ्गाबाद तक शिवाजी

ने अपना अधिकार जमा लिया। उस समय दक्षिण का सूबा शायस्ताखां के शासनाधीन था। औरङ्गजेब ने मरहठों को दमन करने के लिये शायस्ताखां को आज्ञापत्र भेजा। आज्ञा के पातेही प्रबल दल से शायस्ताखां ने शिवाजी पर चढ़ाई की उस समय शिवाजी की अवस्थिति रायगढ़ में थी। इस चढ़ाई का समाचार पातेही शिवाजी रायगढ़ से सिंहगढ़ में आ रहे। उधर शायस्ताखां ने पूने पर अपना अधिकार किया और उसी महल में रहने लगा कि जिसे दादाजी कर्णदेव ने शिवाजी और उनकी माता के रहने के लिये बनवाया था। शायस्ताखां ने बड़ी सावधानी और चेतनता से महल और नगर की रक्षा में सेना नियत कर दी थी और यह घोषणा प्रचार कर दी थी कि बिना आज्ञा के कोई हथियारबन्द मरहठा नगर के अन्दर न आने पावे। परन्तु वीर शिवाजी के लिये यह सावधानी कुछ भी काम न आई। उन्होंने अपना कार्य्य सिद्ध करही लिया॥

एक दिवस रात्रि को जिस समय घोर अन्धेरी छा रही थी, बाट बाट कुछ भी नहीं सूझता था आधी रात का समय था दैवयोग से किसी की बरात

पूना को जा रही थी, उसी समय परम साहसी धीर वीर शिवाजी केवल पचीस सिपाहियों को साथ ले उस बरात में जा मिले, बराती बन हँसते बोलते पूना के अन्दर जा दाखिल हुए और साथही सीधे अपने मकान की ओर चले। वहां निज गृह होने के कारण शिवाजी को उसके रास्ते और सब हाल विदित ही था। एक वेरही साथियों के लिये उस स्थान में पहुंचे कि जहां शाइस्ताखां अपनी बेगमों के साथ सो रहा था। * आतेही शिवाजी ने ललकारा। उस समय शायस्ताखां इस अकस्मात उपद्रव से ऐसा घब-राया कि अपनी वीरता भूल गया। उससे कुछ भी न बन पड़ा। शिवाजी के प्रताप से शायस्ताखां घबड़ा के एक खिड़की से कूद कर भाग निकला। भागती समयकिसी मरहठे की तलवार से उसके हाथ की एक उंगली कट गई। परन्तु उसके पुत्र और रक्षकों को शिवाजी ने वहांही समाप्त किया और बहुतसी मसालें बाल आनन्दध्वनि करते शिवाजी शिवगढ़ को लौट आये॥

प्रातःकाल होतेही मुगलों के सवारों ने सिंहगढ़

* अनुमान होता है कि कमन्द के सहारे शिवाजी महल पर चढ़े थे।

पर चढ़ाई की परन्तु शिवाजी ने उन्हें आने से न रोका। वे अपने जोश में भरे आगे बढ़ते चले आये और गढ़ के नीचे तक पहुंच गये तब शिवाजी ने किले के ऊपर से तोपों की बाढ़ दागी जिससे अधिकांश मुगल सैनिक तो वहांही मृत्यु को प्राप्त हुये और बाकी के बचे बचाये अपने प्राण ले भाग निकले। शिवाजी ने एक सर्दार को उनके पीछे कर दिया कि जिसने दूर तक उनका पीछा किया परन्तु फिर वे लौंगजमने का साहस न कर सके और इधर उधर भाग निकले। मरहट्टों से पराजय होना मुगलों का यह पहिला अवसर था। इस आश्चर्य और कुतूहलजनक विजय से शिवाजी की बड़ीही विख्याति हुई अबलों उस प्रान्त वाले शिवाजी के इस वीरता का यशोगान करते हैं। यथार्थ में यह कार्य्य भी ऐसेही वीरता और साहस का हुआ। इसके उपरान्त शिवाजी अपने घुड़सवारों को ले औरङ्गजेब के अधिकृत स्थानों पर अपना अधिकार जमाने लगे॥

इतने दिनों तक तो शिवाजी दोनों घाटीहीं तक धावा मारते थे, परन्तु अब बहुत दूर दूर तक जाने लगे। पूना से डेढ़सौ मील की दूरी पर सूरत नगर

है। उस समय अर्थात् सन् १६६४ ई० में यह बड़ा समृद्धिशाली नगर था। बड़े २ धनाढ्य और विभवशाली सौदागर सूरत में बसते थे। रोजगार बहुतही चढ़ा बढ़ा था। केवल अरब और फारस से यहां सालीना पचास लाख का सोना आता था और दो ऐसे भारी सौदागर यहां थे जो कि संसार भर में धनाढ्य माने जाते थे। दूसरे मक्के जाने के लिये मुसल्मान यात्री इसी स्थान में जमा होते थे कि जिनसे कर स्वरूप सालीना तीन करोड़ रुपये की आमदनी दिल्ली की बादशाही को मिलती थी। शिवाजी ने उसी सूरत शहर पर धावा करने का विचार किया और वे अपने दल बल को बटोर निधड़क सूरत पर चढ़े। शिवाजी के हृदय में भगवती की ऐसी दृढ़ अविचलित भक्ती थी कि जिस भक्तिबल के प्रभाव से वे सदा निशङ्क और निडर रहा करते थे॥

कहते हैं कि शिवाजी सूरत में गुप्त भाव से भेष बदल कर गये, और चार दिन तक उन्होंने नगर में घूम २ कर खूबही थाह ली। उन बहादुरों में से सेना जिन्हें इधर उधर छोड़ आये थे उनमें से चुन के चार हजार सवारों को अपने साथ ले दिन दोपहर सूरत

पर जा चढ़े, और भली प्रकार शत्रुदल को मर्दित कर छ: दिन तक खूबही नगर को मनमाना लूटा। उस समय अङ्गरेजों की भी कोठियां थीं जिनके प्रबन्धकर्ता सर जर्ज अक्सेनडेन साहब थे। इन्हों ने अपने मालिक तथा दूसरे कई एक महाजनों की सम्पत्ति बड़ी दिलेरी से बचा ली, जिसके लिये औरङ्गजेब ने जर्ज साहब को बड़ी शाबासी का पत्र लिखा और कुछ कर भी माफ़ कर दिया था। इस देशवालों से औरङ्गजेब का यह पहिला मुकाबिला था॥

सूरत विजय करके शिवाजी अपने रायगढ़ के किले में आये। उस समय सूरत से यह अतुल विभव धन धान्य, मणिरत्न, हाथी घोड़े साथ ले आये थे। रायगढ़ में आतेही शिवाजी ने सुना कि सत्तर वर्ष की अवस्था में उनके पिता का देहान्त हो गया है। सिंहगढ़ में आकर बड़े समारोह से विधिवत् शिवाजी ने पिता का श्राद्ध किया और श्राद्ध करने के उपरान्त पुन: रायगढ़ में लौट गये॥

मरती समय शाहजी के अधिकार में बङ्गलौर के चारों ओर बहुतसी जागीरें थीं। सिवाय इसके अरंनी, तंजोर और पोर्टो,नोवो,भी इन्हीं के अधिकार में था॥

शिवाजी जैसेही वीर थे वैसेही निज धर्म कर्म और ईश्वर में निष्टावान और गुणग्राही भी थे। किसी विषय का गुणीजन जो उनके निकट आता विमुख कभी नहीं लौटता था। उनकी गुणग्राहिता दूर दूर तक प्रसिद्ध हो रही थी। उस समय भूषण नामक अत्यन्त प्रशंसनीय एक बड़ा कवि प्रसिद्ध राजा छत्रशाल पन्ना वाले के दर्बार में था शिवाजी को गुणग्राहक सुन भूषण बुन्देलखण्ड से शिवाजी के दरबार में आया और इनकी प्रशंसा में यह कवित्त पढ़ा—

इन्द्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभ पर,
रावण सुदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन वारिवाह पर शंभु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबांह पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदुंड पर चीता मृगझुंड पर,
भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तिमिरंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलेच्छवंस पर सेर सिवराज है।

यह कविता सुन शिवाजी ने भूषण को पांच हाथी और पचास हजार रुपये दिये और बड़े आदर सत्कार से कविराज को अपने दरबार में रक्खा॥

पिता के देहान्त के उपरान्त शिवाजी ने विचारा कि अब तक पूज्य पिता बैठे थे उनके बैठे राजा बनना उचित न था परन्तु अब उनका देहान्त हो गया इसलिये अपना राज्य नियत कर राजा बनना चाहिये। अहा शिवाजी की पितृभक्ति और मर्य्यादा कैसी प्रशंसनीय थी!

सन् १६६४ ई० में शिवाजी ने अपना राज्य स्थापन कर टकसाल बनवाई और अपने नाम का सिक्का ढलवाया॥

आज शिवाजी की प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। दुर्धर्ष यवनों के गर्व को खर्व कर शिवाजी ने हिन्दू राज्यस्थापन किया। यवनों के कराल द्वेषाग्नि से भुलसे हुए हिन्दुओं के हृदय शीतल हुए। निज धर्म कर्म रक्षा के लिये शरण मिली जिसकी प्रशंसा में भूषण ने कहा है—

वेद राख्यो विदित पुरान राख्यो सारसुत,
राम नाम राख्यो अति रसना सुघर में।
हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की,
कांधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गल में।
मीड़ राखे मुगल मरोड़ राखे बादशाह,
बैरी पीस राखे बरदान राख्यो कर में।

राजन की हद्द राखी तेजबल शिवराज,
देव राख्यो देवल स्वधर्म्म राख्यो धरमें ॥
मारकर बादशाही खाक शाही कीन्हींजिन,
जेर कीन्हीं जोर सों लै हद्द सब मारे की ।
खिस गई सेखी फिस गई सूरताई सब
हिस गई हिम्मत हजारों लोग प्यारे की ।
बाजत दमामें लाखों धौंसा आगे धुरजात
गरजत मेघ ज्यों बरात चढ़े भारे की ।
दूल्हो शिवराजभयो दच्छनी दलालेवाले
दिल्ली दुलहिन भई शहर सितारे की ॥

पांचवां अध्याय।

(जलयुद्ध, महाराज जैसिंह से भेंट और सन्धी का प्रस्ताव)

शिवाजी ने सोचा कि जल थल दोनों पर सम बल बिना रक्खे पूर्ण रूप से शत्रु पराजय नहीं हो सकते इसलिये उन्हों ने बहुत सो रण नौकायें बनवाईं* इन जहाजों पर चढ़ मरहट्टे जलपथ से दूर दूर तक लूट मार करते और मक्के जाने वाले यात्रियों को लूटते जिससे बड़ी लूट उनके हाथ लगती। सन् १६६२ ई० के फरवरी में शिवाजी ने बड़ी तैयारी से जलपथ द्वारा युद्ध की चढ़ाई की। उस समय शिवाजी अट्ठासी जहाज ले कर चढ़े थे जिसमें तीन जहाज बहुत बड़े थे जिनमें तीन तीन मस्तूल लगते थे। बाकी ऐसे थे कि जिनमें का बोझा एक एक जहाज पर लदता था। इन जहाजों पर चार हजार सैन्य थे। यह चढ़ाई शिवाजी ने वरसिलोर पर की थी, जो गोवा से १३० मील दक्षिण की ओर था। काल का भी क्याही प्रभाव है आज उस स्थान का नक्शे तक में भी नाम नहीं है!

---

* शिवाजी ने जो जहाजी नावें बनवाई थी उनके आकार भेद से यनामे थे—गुराब, तरन्डी, गलबोत घुबारे, शिबाडे पगार, मचवे, बगोर, तिरकटी, पाल इत्यादि ५० हजार रजतरी बनवाई थीं॥

समुद्र की जल और वायु से शिवाजी का स्वास्थ बहुतही बिगड़ गया और वायु प्रतिकूलता के कारण बड़े कष्ट सहने पड़े परन्तु केवल साहस के बल से वे निज उद्योग में क्षत कार्य्य हुए और बहुत कुछ लूट और धन लेकर निज राजधानी में लौट आये। यही प्रथम और अन्तिम अवसर था कि स्वयं शिवाजी ने इस धूमधाम से जलयुद्ध की यात्रा की थी। यह चढ़ाई सन् १६४५ ई० के आरम्भ में हुई थी॥

निज राजधानी में पहुंचतेही इन्हें सोच हुआ कि मक्के के यात्रियों को लूटने के कारन क्रोधित हो कर औरङ्गजेब ने अधिक सैन्य के साथ अम्बराधिपति महाराज जेसिंह और दिलेरखां को भेजा है जो उन की अमलदारी तक पहुंच गये हैं॥

शिवाजी ने अपने मंत्रियों से विचार कर यह स्थिर किया कि इससे युद्ध न कर सन्धि कर लेनी चाहिये। शिवाजी ने अपनी ओर से रघुनाथ पन्थ न्याय शास्त्री को सन्धि के प्रस्ताव के लिये जयसिंह के पास भेजा। महाराज जयसिंह की दूत से बहुत कुछ बातें हुईं। और दूत के लौट आने पर स्वयम् शिवाजी थोड़े से मनुष्यों को साथ लेकर जयसिंह की

भेंट को गये। डेरे के निकट पहुंच कर शिवाजी ने अपने आने का समाचार कहला भेजा। जयसिंह ने एक सर्दार को अगवानी के लिये भेजा और डेरे के द्वार पर से आप आकर अगवानी की और बड़े सत्कार के साथ ला कर शिवाजी को अपनी दाहिनी गद्दी पर बैठाया। सन्धी के नियम के विषय में शिवाजी ने कहा कि इस समय मेरे आधीन बत्तीस किले हैं जिनमें से बीस किले बादशाह को लौटा दूंगा और बारह किले अपने आधीन रक्खूंगा जो निज राज्य के चारों ओर हैं। सिवाय इसके लाख "पैगोड़ा" खिराज के दूंगा। परन्तु मुक्तामों की पूर्ति के लिये शिवाजी ने बड़ी चतुराई से यह कहा कि बीजापूर इलाके पर "सरदेसमुखी अर्थात् चौथ लगाई जावे और उसकी उगाही मेरे जिम्मे हो। शिवाजी को इन बातों की मंजूरी करवाने की इतनी आतुरता थी कि उन्होंने चालीस लाख "पैगोड़ा" अर्थात् दस लाख रुपये "पेशकस" अर्थात् नजर देना स्वीकार कर लिया और कहा कि आहिस्ता किश्त कर मैं इसे चुका दूंगा॥

औरङ्गजेब ने शिवाजी की इन बातों को मंजूर

५

की परन्तु चौथ के बारे में कुछ उत्तर न दिया जिस का शिवाजी ने यह तात्पर्य्य निकाला कि चौथ के बारे में कुछ न कहना यह भी एक प्रकार की मंजूरी है। एवं तदनुसार चौथ जारी की। भारतवर्ष में चौथ की यही प्रथम प्रथा हुई। इस प्रकार की चतुराई से शिवाजी ने इस बड़ी मुहीम को भी टाला॥

औरङ्गजेब की फौज ने बीजापूर पर चढ़ाई की शिवाजी ने उस चढ़ाई में अपने वैमात्रिक भाई विन काजी के आधीन में दो हजार घुड़सवार और आठ हजार पैदल मरहट्ठे दिये। इन योधाओं ने बीजापूर के मैदान में बड़ी बहादुरी दिखलाई॥

सन् १६६६ में औरङ्गजेब ने शिवाजी को अपने दरबार में बुलाने के लिये निमन्त्रणपत्र भेजा। इस निमन्त्रण को पा कर शिवाजी अपने पुत्र शम्भूजी को और पांच सौ सवार तथा एक हजार मावली सैन्य को साथ लेकर दिल्ली चले। भूषण कवि भी इनके साथ ही था॥

शिवाजी के पहुंचते ही दिल्ली में धूम धाम मच गई। नित्य सहस्रों मनुष्य शिवाजी को देखने आने लगे। बादशाह ने अपने दरबार में शिवाजी को

बुलवाया परन्तु मदान्ध औरङ्गजेब उस समय शिवाजी की वीरता और प्रताप को भूल गया और शिवाजी को तीसरे दर्जे के कर्मचारियों के आसन पर बिठलाना विचारा। दर्बार में पहुंचते ही शिवाजी को ज्यों ही अपने बैठक की खबर लगी कि क्रोध से उनका शरीर कांप उठा परन्तु दूर दर्शी शिवाजी बादशाह के बिना जुहार मुजरा किये दरबार से लौट आये॥

वीर बड़े बड़े मीर पठान खरो रजपूतन को गनुभारो। भूषन आप तहां शिवराज लियो हरि औरङ्गजेब को गारो॥ दीनो कुज्वाव दिल्लीपति को अरु किनो उजीरन को मुह कारो। नायो नामाथही दच्छिन नाथ न साथ में सैन न हाथ हथ्यारो॥

सबन के ऊपर खडो रहन योग ताहि तहां खडो कियो जाय जारियन के नियरे। जानि गैर मिसिल गुसीले गुसा धारि कीन्हो ना सलाम न बचन बोले सियरे॥ भूषन भनत महावीर बलकन

लाग्यो सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे। तमकते लाल मुख शिवा को निरख भयो, स्याह मुख औरङ्ग सिपाह मुख पियर ॥

डरे पर आ. के शिवाजी ने अपने लौटने के लिये कहला भेजा परन्तु औरङ्गजेब ने कहा कि अभी कुछ दिन ठहरें। बादशाह की भीतरी इच्छा यह थी कि प्रबल वैरी शिवाजी हाथ आगया है अब इसे जन्म भर न छोड़ूंगा। इसी अभिप्राय से शिवाजी को रोका और जहां शिवाजी थे वहां इस बात की चौकसी करवा दी कि कहीं निकल न भागें॥

कुछ दिनों के उपरान्त शिवाजी ने कहला भेजा कि हमारे लशकर को यहां की जल वायु माफ़िक़ नहीं है इसलिये मैं चाहता हूं कि अपनी सैन्य को दक्षिण लौटा दूं। बादशाह ने शिवाजी की इस प्रार्थना को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया क्योंकि उसने सोचा कि यह और भी उत्तम होगा कि शिवाजी अपनी फ़ौज को लौटा के आप अकेला मेरी राजधानी में रहे॥

फ़ौज के लौट आने पर नगर में यह प्रसिद्ध हो

गया कि शिवाजी बहुत बीमार हैं। यहां तक कि उठ बैठ नहीं सकते। शिवाजी नित्य मनों मिठाई बड़े २ टोकरों में भर नगर और नगर प्रान्त में ब्राह्मण और भिखारियों को बटवाने लगे। कई दिनों तक नित्य योंही मिठाई बटती रही और पहरेवालों को निश्चय हो गया कि भीतर से बड़े २ मिठाइयों के टोकरे नगर में बटने के लिये आया करते हैं तब एक दिवस गोधूली के समय एक टोकरे में आप और दूसरे में निजपुत्र शम्भूजी को बैठा मजूर के सिर पर रख बेधड़क नगर से बाहर निकल आये। यहां पहिले ही से अति उत्तम कसे कसाये दो घोड़े खड़े थे कि जिन पर शिवाजी और शम्भूजी बैठ लिये और वहां से चलते हुये। दूसरे दिन मथुराजी पहुंच वहां किसी अपने मित्र के यहां पुत्र शम्भूजी को छोड़ आप साधू का भेष बना दक्षिण की ओर चल निकले। इनके जाने के उपरान्त उनके मित्र ने शम्भूजी को भी मकान पर पहुंचवा दिया। सन् १६६६ के दिसम्बर में शिवाजी भी अपने किले में आ दाखिल हुए॥

जयसिंह उस समय औरङ्गजेब की आज्ञा से बीजापूर में युद्ध कर रहे थे। जयसिंह को कुछ अधिक

सैन्य की आवश्यकता हुई इसलिये बादशाह से सहायता के लिये सैन्य मांग भेजी। धूर्त औरङ्गजेब का किसी पर भी विश्वास न था। कर्मचारियों में जो अधिक प्रबल हो जाता था चाहे वह कैसा भी विश्वासी क्यों न हो उसके ध्वन्स साधन में सचेष्ट रहता। इसी लिये जयसिंह को नीचा दिखाने के लिये मदद न भेजी। अन्त विवश हो जयसिंह बीजापूर से लौटे और बाटही में उनका प्राणान्त हुआ। उसी अवसर में पुनः शिवाजी ने अपने सम्पूर्ण किलों पर धीरे २ अधिकार जमा लिया। उधर औरङ्गजेब ने सोचा कि कहीं शिवाजी बीजापूर से मिल न जाये इसलिये उन्हें एक जागीर और राजा का खिताब भेजा॥

सन् १६६७ ई० में बीजापूर के सुलतान के मरने पर उसके उत्तराधिकारी से शिवाजी ने तीन लाख का सालीना और गोलकुंडे के सुलतान से पांच लाख रुपये सालीना ठहराय लिये और खानदेशवाले से चौथ लेने लगे। इस काल में शिवाजी ने अपने राज्य का खूबही विस्तार फैला लिया था। उत्तर में नर्मदा नदी के अपर पार में मुगलों की अमलदारी थी। शिवाजी ने उसे भी अपने अधिकार में कर लिया

और दक्षिण में मैसोर तक निज आधीन कर लिया था। इस समय औरङ्गजेब अफगानिस्तान के युद्धविग्रह में लग रहा था। इस सुयोग्य को पा शिवाजी ने कोकन और दोनों घाटों पर भी निज अधिकार जमा लिया॥

पांचवा बयान।

(शिवाजी की प्रजापालन नीति और राजप्रबन्ध)

इसके उपरान्त कुछ काल तक लड़ाई भिड़ाई को छोड़ निज राज्य प्रबन्ध करने में शिवाजी ने चित्त लगाया। अपने राज्य के बड़े २ पदों के अधिकारी ब्राह्मणोंही को बनाया था। किसानों को किसी प्रकार का कष्ट न हो, किसी पर कोई अन्याय न करे, निर्बल को जबर न सतावे इत्यादि विषयों पर शिवाजी की सदा तीव्र दृष्टि रहा करती। धर्ती की जो उपज होती थी उसका यह नियम था कि पांच भाग में तीन भाग किसान को मिलता और दो भाग सर्कार में जमा होता। मालगुजारी उगाही

के लिये यह प्रबन्ध था कि दो दो तीन तीन ग्रामों पर एक एक कारकून, एक एक छोटे जिलों पर तरफदार, कई तरफदारों पर एक सूबेदार, जिमींदार देशमुख या देशपांडे कहलाते थे। शिवाजी किसानों पर जो कर स्थापित कर देते थे उसी अनुसार वे उगाही करते और सरकार में दाखिल कर देते। फौज को खजाने से तनखाह माहवारी दी जाती थी। इनकी फौज में मावली जाति वाले ही अधिक थे। तरवार, ढाल, भाला, बर्छा और बन्दूक इन लोगों का प्रधान हथियार था। पैदल सिपाहियों को माहवारी तीन चार रुपये से दस बारह रुपये तक तनखाह मिलती थी। रिसाल में दो भेद थे। एक वर्गी और दूसरे सिलेदार कहाते थे। वर्गी वे कहे जाते थे कि जो सर्कारी घोड़े से काम देते थे। उन्हें माहवारी छः सात रुपये से पन्द्रह बीस रुपये तक मिलते थे। सिलेदार वे लोग थे कि जो निज का घोड़ा रखते थे। इन्हें माहवारी पन्द्रह बीस से चालीस पचास रुपये मिलते थे। लूटने में जो कुछ मिलता वह सर्कारी खजाने में दाखिल होता और लूटनेवालों को उपयुक्त इनाम मिलता। सेना में यह

बन्दोबस्त था कि दस सिपाही पर एक नायक, पचास सिपाही पर एक हवलदार, और सौ सिपाही पर एक जुमलेदार होता था। हजार सिपाही का अफ़सर एक हजारी और पांच हजार के ऊपर सरनौबत अर्थात् सेनाध्यक्ष कहा जाता था। इसी प्रकार रिसाले में भी था, अर्थात् पचीस सवार पर हवलदार १२५ पर जुमलादार ६५५ पर सूबेदार और ६२५० सवार जिसके आधीन हों तो वह पांच हजारी कहाता था। इन सवारों के घोड़े बहुत बड़े नहीं बरन टांगन होते थे, जो कि जंगल और पहाड़ों पर बड़ा तेजी और सुगमता से जाते थे। ये घोड़े ऐसे सिखाये हुए थे कि शत्रुओं के दल में घुस जाते जहां वे लोग भोजन बनाते होते। वहां आकर ऐसा उपद्रव मचाते कि भोजन नष्ट भ्रष्ट कर के लौट आते थे॥

क्वार के महीने में नवरात्रि पर शिवाजी महिष मर्दिनी दशभुजा दुर्गा की पूजा बड़े समारोह से करते और विजयदशमी पर फ़ौज की हाजिरी लेते एवं जहां कहीं चढ़ाई करनी होती तो इसी दिन करते॥

अफ़गानिस्तान से लौट कर बाहरी आपाधापी दिखा कर औरङ्गजेब ने पुनः शिवाजी को अपने

दर्बार में बुलाना चाहा था परन्तु उसकी यह चेष्टा फलवती न हुई। शिवाजी औरङ्गजेब के कपट जाल में न आये। परन्तु दक्षिणी देशों पर बराबर अपना अधिकार फैलाते ही चले गये। शिवाजी का यह प्रभाव दिन रात औरङ्गजेब के हृदय को डाहता और यह मनही मन विचार किया करता कि—

औरङ्ग यों पछताय मन करतो जतन अनेक।
शिवा लेयगो दुरग सब को जाने निसि एक॥

निदान विवश हो औरङ्गजेब ने शिवाजी से घोर संग्राम करना चाहा इस समाचार के मिलने से वीर शिवाजी का हृदय बादशाह के कोप से नेक भी न दहला, वरन द्विगुणित साहस और उत्साह से सच्चे वीर पुरुषों की नाईं निज धर्म रक्षा में यत्नशील हुये। और मुगलों के अधिकृत कई एक किलों पर विजय पताका उड़ाई। उन्होंने सिंहगढ़ को विजय करने में बड़ीही वीरता दिखाई वह बड़ाही विकट गढ़ था, परन्तु शिवाजी का एक वीरवर सैनिक अपने मावली सिपाहियों को ले दीवार फांद कर किले के अन्दर घुस गया और बड़ी बहादुरी से विजय पाई। इस युद्ध से शिवाजी ऐसे प्रसन्न हुए कि अपने बहा-

दुरों को निज हाथ से कड़े पहिराये और बड़ी शाबाशी दी। यों हीं पुरन्दर के किले को भी जीत के इन्होंने अपने अधिकार में कर लिया। इसके उपरान्त बारह हजार सैन्य लेकर शिवाजी दुबारा सूरत पर चढ़े और तीन दिन तक मनमाना लूटा॥

दिल्ली दलन गजाय कैं सर सरजा निरसंक।
लूट लियो सूरत सहर, बङ्क करि अति डङ्क।
बङ्क करि अति डंक करि स संक कुलिखल।
सोचत चकित, भरोचच्चलित विमोचत
चखजल। हठठिक मन, कठठिक सुन रट्ठ-
ट्ठिल्लिय,इसदिवि भद्दद्दिविभई रधूध दिल्लीय॥

लौटती समय राह में अङ्कलीनामक नगर को लूटा कि जहां से बहुत सा धन हाथ लगा। उधर शिवाजी के प्रतापराव नामक सेना नायक ने खान देश पर चढ़ाई की और विजय कर उसपर चौथ लगाई। मुगलों के अधिकार में चौथ लगाने का शिवाजी का यह पहिला मौका था॥

सूरत से लौटती समय दाऊदखां नामक एक सेनापति ने पांच हजार घुड़सवारों से शिवाजी का मुहाना रोका परन्तु शिवाजी ने युद्ध में उसें पूर्णरूप

से परास्त किया। इस समाचार को पाकर बड़े क्रोध से चालीस हजार सेना के साथ औरङ्गजेब ने मुहब्बत-खां को शिवाजी पर भेजा। वीर धुरन्धर शिवाजी ने भी अपने प्रधान सेना नायक मोरोपन्त और प्रताप-राव को युद्ध के लिये भेजा। न जाने शिवाजी का भाग्य कैसा प्रबल था कि बड़ी वीरता के साथ सेना नायकों ने मोहब्बतखां को ससैन्य परास्त किया। मुगलों की सैन्य हार कर हट गई। यह युद्ध सन् १६६२ ई० में हुआ था। उस युद्ध में मुगलों की बहुत सैन्य कटी और पूर्ण रूप से पराजय हुई। मुगलों के १२ प्रधान प्रधान सेना नायक मारे गये और कई एक को मरहटों ने कैद कर लिया। इन कैदियों को शिवाजी ने अपने निकट रख बड़ी खातरी से उनकी सेवा करवाई और अन्त उन्हें छोड़ दिया। आज तक मुगलों और मरहटों से जितने युद्ध हुए यह युद्ध सबमें प्रधान था, इस युद्ध में मुगलों के सब हौसले पस्त होगए और मरहटों की वीरता और रणदक्षता का भली प्रकार परिचय मिला। दूर २ तक शिवाजी की वीरता का यश और आतङ्क फैल गया। इस समय औरङ्गजेब अफगानीयों से ऐसा

उलझ रहा था कि फिर इधर की सुध न रही। शिवाजी की समर चातुरी और अलौक साधारण सामरिक बुद्धि को सुन सुनके लोग चकित और विस्मित होने लगे॥

महाभाग शिवाजी सैंतालीस वर्ष की उमर में शक १५८६ आनन्द नाम के सम्वत्सर के जेष्ठ शुक्ल त्रयोदशी वृहस्पतिवार के दिन रायगढ़ में राजगद्दी पर शास्त्रविधान से बैठे। जिस समय शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ है और राजगद्दी पर बैठने के लिये वस्त्राभूषण और अस्त्र शस्त्र से वह सुशोभित हुए हैं उस समय उनके मुख की छटा देखे ही बन आती थी। राजश्री मानो उनके मुख पर अपनी पूर्ण शोभा दे रही थी। इन्हों ने अपना नाम "छत्रपति महाराज शिवाजी भोंसला" रक्खा॥

शिवाजी ने सिंहासनारोहण के दिन से महाराष्ट्र देश में "शिवशक" अपने नाम का एक शाका चलाया था, जो प्रकट में उनके वंशधर कोल्हापूर के राजघराने में अभी तक चला आता है॥

राज्याभिषेक के उत्सव पर शिवाजी ने अनेक राजों और देशी तथा विदेशी राजदूतों को न्योता

भेज के बुलाया था। उत्सव हो जाने के उपरान्त शिवाजी ने उन सभों को यथोचितसम्मान के साथ बिदा किया था॥

शिवाजी के राज्याभिषेक के उत्सव मे अंगरेजों के दूत शिवाजी के बम्बई में रहनेवाले कर्मचारी नारायणपन्थ के साथ अनेक प्रकार की बहुमूल्य भेंट लेके रायगढ़ में उपस्थित हुए थे। अंगरेज दूत का नाम सर हेनरी अक्स एनयुडन था। अंगरेजों के साथ जो अहदनामा लिखा गया था, उसमें बीस शर्तें थीं, जिनमें से चार मुख्य थीं नाम उनके नीचे लिखते हैं—

(१) राजपुर ध्वन्स के लिये अंगरेजों को उसकी नुकसानी पूरी कर देनी होगी। रापुजर, दव्योल, शचेउल कल्याण नगर में अङ्गरेज सौदागर कोठी बना सकेंगे। शिवाजी का वर्तमान राज्य में और आगे जो बढ़ावेंगे उन सब स्थानों मे भी अङ्गरेज कोठी बना सकेंगे॥

(२) आजाक द्रव्यों पर २॥) रु० सैकड़ा महसूल और बावत के अनुसार द्रव्य मोल ली जायगी और बेची जायगी॥

(३) जैसा सम्राट का शुद्ध चाँदी का सिक्का चलित है वैसा ही रुपया उन्हे भी बनाना पड़ेगा॥

(४) जहाज वगैरह टूट के समुद्र तट में पड़ा रहे या डूब जाय तो जिसका उस स्थान में दखल होगा वही उस जहाज का भी मालिक माना जायगा॥

और तो सब शर्तें प्रसन्नता पूर्वक अङ्गरेज दूत ने मान लीं परन्तु चौथी शर्त पर उसने बहुत नाहीं नूहीं की परन्तु शिवाजी ने जब उसका उज्र न माना तब लाचार उसने मान लिया और उस अहद-नामे पर शिवाजी तथा उनके आठ प्रधान मंत्रियों ने हस्ताक्षर किये॥

कई दिन शिवाजी ने बड़ी खातरी से दूत को महिमान रख के बिदा किया, वह शिवाजी से बिदा हो बम्बई लौट आया॥

राज्याभिषेक के उपरान्त शिवाजी ने सुवर्ण और मणिरत्न की तुला की इसमें १६००० पैगोडा अर्थात् ६४००० हजार रुपये का सोना चढ़ा था। तदुपरांत रायगढ़ में नारायण का एक बड़ा ऊँचा मन्दिर बनवाया उसकी भी प्रतिष्ठा बड़े धूमधाम से की॥

योंही नित्य दान पुन्य और युद्ध विषय में शिवाजी के दिन बीत रहे थे इसी बीच में उनकी गर्भधारिणी माता जीजाबाई अपने पुत्र पौत्रों के बीच शरीर छोड़

नित्यधाम को पधारी। माता के मरने से शिवाजी बालकों के ऐसे अधीर हो गये। अशौच के उपरान्त शास्त्र विधि से बड़े धूमधाम से माता का श्राद्ध कर ब्राह्मण भोजन और दीन दुखियाओं को अन्न वस्त्र द्रव्य दान दिया॥

जीजाबाई बड़ीही धर्मात्मा थीं और सदाकाल उनका पूजा पाठ और ज्ञान चर्चा में व्यतीत होता था। उन्ही के गुण से शिवाजी ऐसे धर्मात्मा और बीर हुए थे। उन्हीं के उपदेश से शिवाजी के हृदय में यह बात आई थी कि हिन्दू धर्म विरोधी मुसल्मानों को दमन कर पुन: हिन्दूराज की स्थापना कर जगत् में हिन्दुओं की कीर्ति बढ़ावें। जिस समय शिवाजी औरंगजेब की भेंट को दिल्ली गये थे माताजी ने उपदेश स्वरूप जितनी बातें लिखा दी थीं उतना ही उन्हों ने किया था और जिनको जिनको साथ लेजाने की आज्ञा दी थी उन्हीं लोगों को साथ लिवा ले गये थे। शिवाजी सदा माता की भक्ति करते रहे और उनकी आज्ञा मानते रहे। उसी पुण्य से ऐसे फूले फले और जगत् में उनकी कीर्ति का विकाश हुआ॥

शिवाजी के हृदय में माता के विच्छेद रूपी

आघात का घाव अभी भरने भी न पाया था कि इतने ही में उनके हृदय पर और एक बड़ी प्रबल चोट लगी। शिवाजी की सहधर्मिणी धर्मपत्नी जो सदाकाल उनके सुख दुःख की साथिन थी, जो भोजन कराने में माता सा स्नेह दिखाती, जो सेवा के समय उत्तम गुणवाली दासी सी सेवा करती थी और सलाह काल में उपयुक्त मंत्री का काम करती थी तथा विहार काल में पतिव्रता स्त्री सी उन्हें सुख देती थी ऐसी गुणवती परमप्रिया सईबाई पति पुत्र कन्या को घोर दुःख में छोड़ चित्त की शांति पूर्ण अवस्था में आप नित्यधाम को सिधारीं। माता और थोड़े ही दिन उपरान्त धर्मपत्नी की मृत्यु से शिवाजी बड़े ही व्यथित और खेदित हुये पर इतने पर भी जी की व्यथा जी ही में छिपा शिवाजी अपने पूर्ववत् उद्यम उत्साह से राजकाज करते रहे भोजन वस्त्र तथा अनेक दान धर्म कर के शिवाजी ने योग्य पण्डितों को तथा दुखियाओं को दिया। उस दिवस अति उतंग गिरिशृङ्ग पर स्थित रायगढ़ में आनन्द का समुद्र सा उमड़ आया। राजसिंहासन पर बैठने के स्मारक में शिवाजी ने अपना एक शाका भी चलाया था॥

सिंहासन पर बैठने के उपरान्त शिवाजी ने देखा तो अनेक यावनी शब्द महाराष्ट्र भाषा में आ मिले हैं इसलिये राजकाज करने वाले लोगों के पदों के शब्द में बहुतसा हेरफेर किया। उनके आठ प्रधान मन्त्री थे जिनके पद के शब्दों में यों हेर फेर किया—

	धर्म्माचारियों के नाम	नवीन उपाधि।	पुरानी उपाधि।
१	मोरोपन्त पिंगले	... मुख्यप्रधान	... पेशवा
२	रामचन्द्र नीलकण्ठ	... पन्त अमात्य	... मजुमदार
३	अन्नाजी पन्त	... पन्त सचिव	... सूरनीस
४	हम्बीरराव मोहिते	... सेनापति	... सरनोवत
४	जनार्द्दनपन्त हनुमान्त	... सुमन्त	... चारमुलकी
६	बालाजी पन्त	... न्यायाधीश	... अदालत
७	रघुनाथ पन्त	... न्यायशास्त्री	... दबीर
८	दत्ताजी पन्त	... मन्त्री	... वयाकनीस

सन् १६७५ ई० में इन्होंने अपनी सेना को नर्मदा के अपर पार भेजा कि जिसने जाकर गुजरात विजय की॥

सन् १६७६ ई० में इन्होंने बीजापूर के आश्रित अपने वैमात्रिक भाई विकोजी से अपने पिता की जागीर बढ़वाई और बीजापूर का इलाका लूट के

करनाटक विजय किया उस समय इनके साथ चार हजार पैदल और तीस हजार सवार थे। शिवाजी ने सामराज पन्त से पेशवाई लेकर मोरोपन्थ पिङ्गला को उस स्थान पर नियत किया। प्रतापराव गूजर इनके प्रधान सेनापति थे कि जिसके मरने के उपरान्त हम्मीरराव मोहिता उसी काम पर हुआ॥

सन् १६७८ ई० में औरङ्गजेब ने बीजापूर विजय करने के लिये दिलेरखां के आधीन अनेक सैन्य सामन्त के साथ बड़ी फौज भेजी। उस समय बीजापूराधिप ने शिवाजी से सहायता मांगी। शिवाजी ने सहायता देना स्वीकार किया और अपनी रण कुशलता से दिलेरखां को ऐसा परास्त किया कि अन्त उसे दिल्ली लौट आना पड़ा। इस सहायता के पलटे शिवाजी ने तुङ्ग भद्रा औ कृष्णा के बीच की धर्त्ती कि जिसे रायचूर दोआबा कहते हैं पाई। सिवाय इसके दक्षिण में अपने पिता की जागीर और उन स्थानों को भी पाया जिन्हें इन्होंने स्वयम् विजय किया था। बीजापूर की ओर से सहजही इन्होंने सीमा के बीच के स्थानों को विजय कर लिया और औरङ्गजेब के आछत शिवाजी ने तीन दिन तक औरङ्गाबाद में

मनमानी लूट की। इस यात्रा से लौट कर शिवाजी ने भिन्न भिन्न दूसरे सत्ताईस किले जीते॥

सन् १६८० ई० में शिवाजी के घुटनों में दर्द उठी और, घुटने फूल गये साथही ज्वर भी आगया। उस समय शिवाजी रायगढ़ में थे। इसी कालज्वर में तारीख ५ अप्रेल को महाबली, धर्मधुरीन महाराज छत्रपति शिवाजी भौंसले का देहावसान हुआ! उस समय उनकी ५३ वर्ष की अवस्था थी॥

शिवाजी के दो पुत्र थे सम्भाजी और राजाराम। सम्भाजी ने किसी एक ब्राह्मणी से बलात् व्यभिचार किया था इसलिये शिवाजी ने पुत्र को कुछ दिन कैद करा दिया था। यह उनके न्यायपरता का उज्ज्वल दृष्टान्त है॥

प्रतापी महाराज शिवाजी ने निज बाहुबल से बहुदूर-व्याप्त निज राज्य को स्थापित किया था। उनके राज्य का विस्तार उत्तर में चार सौ मील लम्बा और एक सौ बीस मील चौड़ा था। उन्होंने कर-नाटक का दक्षिणी आधा हिस्सा निज अधिकार में कर लिया था और तन्जौर में भी निज आधिपत्य स्थापन किया था। नर्मदा से तंजोर तक और कांकन

से समुद्रतट लों विस्तृत भूखण्ड के स्वामीओं में से सबही उन्हें कर देकर सन्तुष्ट होते थे। दिल्ली से लौट कर चौदह वर्ष तक लगातार शिवाजी ने बड़ी २ लड़ाइयां मुगलों से कीं परन्तु सदा उनके दांत खट्टे ही करते रहे। जब शिवाजी जीते रहे औरङ्गजेब ने कभी भी दक्षिण देशों में स्वयम् जाने का साहस न किया। शिवाजी के देहान्त के उपरान्त सन् १६८३ई० में औरङ्गजेब ने स्वयम् दक्षिण में चढ़ाई की थी॥

शिवाजी के मृत्युसमाचार को सुन कर औरङ्ग-जेब के हृदय मे एक प्रकार का दुःख सा हो आया। उसने कहा—यथार्थ में शिवाजी बड़ा ही बहादुर पुरुष था कि जिसने मेरे मुकाबले पर एक स्वतंत्र राज्यस्थापन कर लिया। मेरे सिपाही लगातार १९ वर्ष तक उस बहादुर से लड़ते रहे और मैं चाहता रहा कि उसका विनाश करूं पर शाबास है उसकी बहादुरी को कि जिसने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण कर अपनी टेक रख एक स्वतन्त्र राज्य स्थापन किया। इसमें सन्देह नहीं कि प्रतापी औरङ्गजेब का प्रताप भारत की चारों दिशाओं में अपना आतङ्क फैला रहा था, लोग उसके कठोर शासन से भयभीत हो रहे थे

और राजपूतों के प्रताप का सूर्य अस्ताचल पर आश्रय ले रहा था, भारत के प्राचीन प्रताप और वैभव को भारत दुर्दैव ने नष्ट और भ्रष्ट कर डाला था। किसी समय जिनके पूर्वजों के साहस और वीरता का झंडा जग में फहराया हुआ था उस समय के स्वाधीनता को जलाञ्जलि दे पराधीनी की बेड़ी पहिर वे अपने जीवन के दिन बिता रहे थे। जिस तेजस्विता के बल से पृथ्वीराज ने पवित्र तिरोरी क्षेत्र में अपनी वीरता दिखाई थी, समर सिंह ने आत्मप्राण को तुच्छ मान भैरव रव से विधर्मी शत्रुओं का मुकाबिला किया था, और अन्त में प्रातस्मरणीय प्रतापसिंह प्रबल पराक्रमी सहायसम्पन्न शत्रुओं से युद्ध कर विजयलक्ष्मी से परिशोभित हुए, उस समय वह तेजस्विता और स्वाधीन प्रियता धीरे धीरे अस्त हो चली थी। आपस की अनबनत से लोग मटिया मेंट हो रहे थे। हिन्दुओं को मुसल्मानों के आतङ्क से कहीं भी शरण नहीं रह गई थी। लोग उन्हीं की गुलामी में अपने दिन बिता रहे थे। महा पराक्रमी शिवाजी ने उसी समय फूट को फोड़ एके के प्रभाव से अपना ऐसा प्रताप जमाया था कि जिसे देख लोग

विस्मित और चकित होते थे। यहां तक कि इनके प्रताप ने प्रतापी औरंगजेब के हृदय को भी दहला दिया था। थोड़ेही दिनों में शिवाजी ने अपना प्रताप भारत के चारो ओर नगर २ में फैला दिया था॥

शिवाजी केवल उद्दण्ड, समरकुशल वीरही न थे वरन राज्य शासन, प्रजा पालन आदि राजनीति में भी ऐसे चतुर और कुशल थे कि जिसकी प्रशंसा अबलों अंगरेजी इतिहास लेखक गण करते हैं। क्या यह सामान्य आश्चर्य और प्रशंसा का विषय है कि पिता का दुतकारा, निरावलम्ब, निराश्रय, निस्सहाय एक सामान्य बालक बिना किसी के सहारे अपने पौरुष से अपने उद्योग से अपनी चतुराई से इतना बड़ा प्रतापी राजाधिराज हो जाय!

शिवाजी दुर्गा के परम उपासक थे उन्होंने अपने खड्ग का नाम "भवानी" रक्खा था। वह तरवार अबलों सितारे के राजा के यहां है और नित्य उसकी पूजा होती है॥

इति शुभम्